' 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯' 𑓒𑓖𑓘 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓕 𑒤𑒩𑒫𑒩𑒲 𑓒𑓐𑓑𑓙 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓒 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓓𑓔 𑒁𑓀𑒏 𑓒𑓖𑓘)

𑒌 𑒁𑓀𑒏𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱:-

𑒑𑒼 𑒞𑒼 𑒞𑒯𑒹 𑒪𑒱𑓀𑒏 𑒥𑒹𑒪𑒼 𑒤𑒼𑒩 𑒠𑒾𑒢𑒪𑒼𑒠 𑒍𑒤 𑒍𑒪𑓂𑒠 𑒃𑒮𑓂𑒮𑒳𑒋𑒮 𑒍𑒤 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒃𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒤𑒼𑒩𑓂𑒞𑒢𑒱𑒒𑓂𑒞𑒪𑒲 𑒋 𑒧𑒰𑒑𑒰𑒖𑒱𑒢𑒹 𑒃𑒢 𑒣𑒠𑒤 𑒤𑒼𑒩𑓂𑒧𑒰𑒞 𑒁𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒰𑒃𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒳𑒠𑒲𑒼 𑒫𑒱𑒠𑒲𑒼 𑒥𑒼𑒼𑒏𑒮𑓂 𑒣𑒰𑒃𑒢𑓂𑒞𑒱𑒢𑓂𑒑𑒮𑓂 𑒣𑒯𑒼𑒞𑒼 𑒤𑒱𑒪𑒹𑒮𑓂 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒂 𑒁𑒼𑒛𑒱𑒨𑒼 𑒫𑒲𑒛𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒮𑒦𑒏 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫 𑒮𑒦 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏 𑒣𑒩 𑒖𑒰𑒅।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

વ઼રયપ૯થ થ઼ઙછ૯રવ઼પ વ઼દિ૯ થ઼ા્કાર઼વ઼

Google समूह **હોનિ વ઼દિહ ગોગલેગ્રોપસ**

સંપાદકીય઼

વ઼દિ૯ક કછુ વ઼શિષાંકઃ-

૧) હાર઼્કૂ વ઼શિષાંક ૧૨ મ થ઼ંક, ૧૫ જૂન ૨૦૦૮

વ઼દિહ_૧૫_૦૬_૨૦૦૮.પદ૬ **વ઼દિહ_૧૫_૦૬_૨૦૦૮_થમિહુલા.પદ૬** **૧૨.પદ૬**

૨) ગાળ઼ઠ વ઼શિષાંક ૨૧ મ થ઼ંક, ૧ નવ઼મ્વ઼ર ૨૦૦૮

વ઼દિહ_૦૧_૧૧_૨૦૦૮.પદ૬ **વ઼દિહ_૦૧_૧૧_૨૦૦૮_થમિહુલા.પદ૬** **૨૧.પદ૬**

૩) વ઼હિનિ કિથા વ઼શિષાંક ૬૭ મ થ઼ંક, ૧ થ઼ક્ટૂવ઼ર ૨૦૧૦

વ઼દિહ_૦૧_૧૦_૨૦૧૦ **વ઼દિહ_૦૧_૧૦_૨૦૧૦_થમિહુલા** **૬૭**

૪) વાઠ સાહિત્ય઼ વ઼શિષાંક ૭૦ મ થ઼ંક, ૧૫ નવ઼મ્વ઼ર ૨૦૧૦

વ઼દિહ_૧૫_૧૧_૨૦૧૦ **વ઼દિહ_૧૫_૧૧_૨૦૧૦_થમિહુલા** **૭૦**

૫) નાટક વ઼શિષાંક ૭૨ મ થ઼ંક ૧૫ દસિમ્વ઼ર૨૦૧૦

વ઼દિહ_૧૫_૧૨_૨૦૧૦ **વ઼દિહ_૧૫_૧૨_૨૦૧૦_થમિહુલા** **૭૨**

૬) નારી વ઼શિષાંક ૭૭મ થ઼ંક ૦૧ માર્ચ ૨૦૧૧

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह_०१_०३_२०११ विदेह_०१_०३_२०११_तिरहुता ७७

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

विदेह_०१_०८_२०१२ विदेह_०१_०८_२०१२_तिरहुता १११

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

विदेह_१५_०३_२०१३ विदेह_१५_०३_२०१३_तिरहुता १२६

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

विदेह_१५_११_२०१३ विदेह_१५_११_२०१३_तिरहुता १४२

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६८ म अंक १ जनवरी २०१५

विदेह_०१_०१_२०१५

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

विदेह_०१_११_२०१५

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

विदेह_०१_१२_२०१५

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

विदेह_१५_०४_२०१६

विदेह_०१_०७_२०१६

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१४) मैथिली सीडी ऑडियो गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

<u>विदेह_०१_०१_२०१७</u>

उपकसं आमन्त्रित नयनापन आमन्त्रित आलोचकक टिप्पणीक आ□पण

१ कामिनीक पाँच टा कविता आ ओकरपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

वरयएहअ २०८०ह सिसु विदेहक दू सए नीम अंक

<u>विदेह_०१_०८_२०१६</u>

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरि अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

<u>विदेह_१५_०५_२०१८</u>

<u>विदेह_०१_०५_२०१८</u>

<u>विदेह_१५_०४_२०१८</u>

<u>विदेह_०१_०४_२०१८</u>

<u>विदेह_१५_०३_२०१८</u>

<u>विदेह_०१_०३_२०१८</u>

<u>विदेह_१५_०२_२०१८</u>

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓐𑓑_𑓐𑓒_𑓒𑓐𑓑𑓘

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓑𑓕_𑓐𑓑_𑓒𑓐𑓑𑓘

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓐𑓑_𑓐𑓑_𑓒𑓐𑓑𑓘

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓑𑓕_𑓑𑓒_𑓒𑓐𑓑𑓗

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓐𑓑_𑓑𑓒_𑓒𑓐𑓑𑓗

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓑𑓕_𑓑𑓑_𑓒𑓐𑓑𑓗

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓐𑓑_𑓑𑓑_𑓒𑓐𑓑𑓗

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓑𑓕_𑓑𑓐_𑓒𑓐𑓑𑓗

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓐𑓑_𑓑𑓐_𑓒𑓐𑓑𑓗

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯_𑓑𑓕_𑓐𑓙_𑓒𑓐𑓑𑓗

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

વિદેહ_૦૧_૦૮_૨૦૧૭

વિદેહ ઈ-પત્રિકાક વીછલ રચનાક સંગ- મૈથિલીક સર્વશ્રેષ્ઠ રચનાક એકટા સમાનાન્તર સંકલન

વિદેહ:સદેહ:૨ (મૈથિલી પ્રબન્ધ-નિબન્ધ-સમાલોચના ૨૦૦૯-૧૦)

વિદેહ:સદેહ:૩ (મૈથિલી પદ્ય ૨૦૦૯-૧૦)

વિદેહ:સદેહ:૪ (મૈથિલી કથા ૨૦૦૯-૧૦)

વિદેહ મૈથિલી વિહનિ કથા [વિદેહ સદેહ ૫]

વિદેહ મૈથિલી લઘુકથા [વિદેહ સદેહ ૬]

વિદેહ મૈથિલી પદ્ય [વિદેહ સદેહ ૭]

વિદેહ મૈથિલી નાટ્ય ઉત્સવ [વિદેહ સદેહ ૮]

વિદેહ મૈથિલી શિશુ ઉત્સવ [વિદેહ સદેહ ૯]

વિદેહ મૈથિલી પ્રબન્ધ-નિબન્ધ-સમાલોચના [વિદેહ સદેહ ૧૦]

થહે ૧ોદે૧સ ોડ એનગાલસિહ ત્નાનસલાતોનિસ ોડ માતિહિલિ મિોવૈલ "સાહાસ૧ાવાદહાની" ાનદ વૈ૧સે યોલલેયતોનિ "સાહાસ૧ાવદકિ યહુપા૧ પા૧" હાસ નિતમિોતેદ તહાત તહે એનગાલસિહ ત્નાનસલાતોનિ હાસ નોત વેન ાવલે તો ગ૧ાસપ તહે નુાનયેસ ોડ ોગિનિાલ માતિહિલિ થિહે૧ેડોરે તહે શ્રુતહોર હાસ સતાતેદ ત્નાનસલાતનિગ હસિ માતિહિલિ ોરકસ નિ એનગાલસિહ હમિસેલડ શ્રજોર તહેસે ત્નાનસલાતોનિસ ારે યોમપલેતે તહેસે ુોલદ વે તહે ોડડયિાલ ત્નાનસલાતોનિસ ુતહો૧સિદ વય તહે શ્રુતહોર ોડ ોગિનિાલોર- એદતિોર

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

मातिहिणि मौकस यान वे दौनणोदेद ङोमः
कातपस्:सतिस्गोगणियोम्वदिहायोम्वदिहा- पोतहि

विदेह सम्मान: *सम्मान- सूची*

अपन मंतव्य दतिोनाणिसताङविदिहाणगमाणियोम **पर पठाउ।**

२.गद्य

२.१जगदीश प्रसाद मण्डल- दू टा लघुकथा

२.२नन्द विलास राय- दूटा लघुकथा

२.३नारायण यादव- दू टा लघुकथा

२.४भारतीय मुसलमान आ भारतीयता- मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डल- दू टा लघुकथा

हारि जेना मानब

शारदीय नवरात्र चारि दिन पहिनहि समाप्त भऽ गेल, काल्हि पूर्णिमा छी। सुव्यस्त समय रहने नवरात्र धूम-धामसँ सम्पन्न भेल। सूर्यास्त भऽ गेल, ब्रह्माणी गायत्री जप शुरू ऐ दुआरे नहि केने छल जे इन्द्रासनसँ कौलहुका भारक आदेशपत्र नहि आएल छेलैन।

सूर्यास्त होइते, होइते कहि तहूसँ पहिनहि चान अकासमे बनि रश्मयिोक ओहिना उगल छलजहिना पश्चरियाएल चान बनि चाउरक होइए हँ, एते जरूर भेल जे सूर्यास्त होइते मनोक रंग आ रंगोक मनमे ब्रह्माणीकेँ लालिमा बढ़ए जरूर लागल छेलैन। तहूमे आर चतुरदशीक चान छी। होइतो अहिना छै जे 'उगै चान कि लपकी पूआ!' पएह चान ने भोरक सीमापर पहुँचते पूर्णिमा बनए लगत आ साँझ होइते पूर्णिमाक रंग-रूप पकैड़ उगा कि ऽ जगमगा जाएत, जे चारहि चानसँ—माने चारहि

मासक यात्रसँ–श्रवण-श्रवण, शीतल, शीतयात्रक संग कोजागराक कौड़ी पाश[i] पर बैसल जुआरी सभकेँ सेहो केकरो हँसेबो करत तँ केकरो कनेबो करबे करत। खाएर जे करत, ओकरा भागि छिऐ, जे मन फुरै, जेना मन फुरै तेना अपन करत। बँगटे नायक आकि बँगटे बनि नायकसे ओ जाएत।

ब्रह्मचारी ऐ दुआरे गायत्री-वन्दन नहि कऽ पबै छथि जे अपन ब्रह्म-मुहूर्तक हिसाब नहि मिलि रहल छेलैन। ओ हिसाब छी, आजुक जनिगीक बसिनजन क्रियाकेँ काल्हुक क्रियामे जोड़ि एकसूत्रता बनाएब। तहि बीच स्नानक समिधि आवि ब्रह्मचारीक हाथमे एकटा चिट्ठी थम्हा, नमस्कार करैत बिदा भऽ गेल।

चिट्ठी उनटा जखन ब्रह्मचारी देखलैन तँ पहिने हँसी लगलैन मुदा नाट्याचार्य[ii] मानि जाजपत्रक आश्रममे रखलैन। आश्रमकेँ पुनः उनटा चिट्ठी निकालि देखा कऽ पढ़लैन। लिखल अछि- 'ओहन मनुष्यक निर्माण करैक अछि जे काल्हुक अनुकूल हुअए।'

'आइक दिन केहेन छल आ काल्हि दिन केहेन बनत' ई विचार असगरमे करब ब्रह्मचारी ठीक नहि बुझलैन। तेकर कारण ई नहि जे ब्रह्मचारी विवेकवान् नहि छैथ, भरपूर छैथ। ठीक-ठीक[iii] कोनो विषयक मूल्यांकन करैक क्षमताेमे कमी नहि छेलैन जइसँ निर्णय करैमे बाधा होइतैन। मुदा एते तँ मनमे शंका छेलैन्हे जे देवगण सभ एहेन जाबीर तँ छथिये जे धरती परहक मनुष्यकेँ निमिवैकाल मुँह देखि खाइ-पीबैत, दाँत देखि काटैत, कान्ह देखि घोटैत आ ठीन देखि ओकरा टाट-स्वरक लत तखन जे बलजोरी ओकरा सभसँ अक्षर निकालि बिजेबो कैलैन आ अपनो बजै-भुकैक मुँह बना देलैन तइमे हमरा कोन दोख। तँए नीक हएत जे भने चतुरदशीक यात्र सेहो जाइत अछि, इस्नानो- ध्यान आ बुधियो-विवेककेँ बजा विचारि लिव नीक हएत। वैकतीगत क्रिया जरूर छी मुदा ओहूमे तँ परिवार अछि। पाँच मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। हमरा मनुष्य निर्मैक मात्र भार भेटल अछि आकि ओइ मनुष्यकेँ बसिाह केतएहएत आ बरिआती कते जेतै सेहो भार कहिमे अछि। ओ विधाताक जम्मा छैन। तँए ओ अपन पोथी-पतरा देखियो कऽ आ लिखियो कऽ करत॥

बारहो मासक यात्रसँ बारहो मासक मौसमक रूप बन्हाति होइते अछि। तँए यात्रीक चैतन्य रूप-रंगपर मनसूनक प्रभाव सेहो पड़ैत अछि। तइमे सभसँ सुव्यवस्त मनसून आसनिक यात्रकेँ मानल जाइत भेटैए।

यात्रु गोरकेँ—भाने इसनदानो भाय, धरमदेवो, बुधनाथो आ विवेकोनन्दकेँ—सम्वाद ब्रह्मचारी पठा देलैन।

जाबे ओ यात्रु पहुँचल तइ बीचमे जे खाली समय भेल पेलकैन तइमे उपैक गेलैन जे अनेरे विधाताक काजक भाँजमे पड़ि गेलौं! अपन काजक ने जबाबदेह अपने छी आकि दुनियाँक ठीकेदारो अछि। जखन हुनका (विधाताकेँ) छुट्टी भेटतैन तखन ओ

बर-कनियाँ कपारमे लिखैत रहत। कियो अपने बुधि-विवेकसँ ने अपन काज करै छैथ। कियो काज केला पछाइत छुट्टी पबैए आ ओ (विचारित) छुट्टी मोलेपर काज करै छैथ। ओहन-ओहन देवगामक नाम हमरा बुते उड़त। गामो तँ गामे छी कहि, खुशामद करि कऽ काजो करा लेत। आ उनटा कऽ बजबो करत। जे ई काज अछैतौँकेँ हमही सम्हारैत छिऐ कहि। जाए! जब एते सिखबै-पढ़बैकक धूर-बुधि अपने अछि तखन अपन-अपन जिनगीक काज अपने सम्हारैत चलू। जिनगी कोनो अफ्रीका बोनमे आकि कैलाशक पहाड़क झाड़मे नुकाएल अछि जे नइ देखब। देखते छी जे एक बीघा खेतवला दू बीघा बनबए चाहै छैथ, हाइ स्कूलक शिक्षक कौलेजक प्रोफेसर बनए चाहै छैथ। एकटा करखानावला दोसर बनबए चाहै छैथइत्यादि-इत्यादि सभ चाहिते छैथ। एते तँ दुनियाँकेँ एक्के नजैरमे देख जाइ छी मुदा अपन जे आँखियो आ नजरियो जन्मादिनि संगेमे रहैए से देखबे ने करै छी! हँ, तखन ईहो बात अछिए जे आँखि केकरो अपना कपारमे सटल रहैए मुदा नजैर से थोड़े रहैए, आ तँ नजैरबाने लक ने रहैए।

ब्रह्माजीक समाद पबिते ईमनदार भाय अपन सभ काज छोड़ि दौड़ले पहुँचल।

ओना, ईमनदार भाइक मनमे ब्रह्माजीक आदेश रहैन तँए मानै छल जे जे कहता से करब। मुदा ब्रह्माजी तँ परिवारक अंग बुझि सभकेँ विचार करैले बजौने छेलखिन तँए बाँकी तीनूक- धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकानन्दक प्रतीक्षामे प्रतीक्षारत् छथिए, तँए किछु बाजि नै रहल छैथ। जइसँ किछु बजै नइ छल। संजोग बनल, तीनू गोरे—माने धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकानन्द—संगे पहुँचल।

चारू गोरेक बीचमेब्रह्माजी अपन राज्यादेशक राजपत्र रखि बजला-

“एकरा पढ़ि कऽ सभ बुझियो लिअ आ विचारो दिअ जे ‘औहुका मनुष्यक निर्माण केहेन करब?”

चिट्ठीकेँ बुधिनाथ पढ़लैन आ सभ कियो सुनल। ओना, सुनि-सुनि जहिना ईमनदार भाय बिहुँसै छल तेना ने विवेकानन्दे बिहुँसै छल आ ने बुधिनाथेकेँ ओहन बिहुँसी एलैन। मुदा धर्मनाथक मन कोठीक गोरा तरमे राखल चुनक कोहीक मुँह जहिना चुन सन रहै छै तहिना होइत रहैन। बाजैथ किछु ने मुदा तरे-तर मन मसकैन जे धरासँ लऽ कऽ दुनियाँ धरि जँ केकरो गरदैनकट्टी भेल तँ हमरे भेल हेन। चिड़ै जकाँ एकोटा पाँखि देहमे सटल ई समय नहि रहए देलक। मुदा तँए कि हारि मानि लेब! जखन धरतीपर जनम लेलौं, धरतीसबहक माता छैथ तँ हमरो ने छथिए। माए-बच्चाक सिनेह तँ दुनू दिसि ने हएत।

चिट्ठी सुनि सभ कियो गुम्म भऽ विचार करए लगल जे समय-सापेक्ष मनुष्य बनै आकि मनुष्य-सापेक्ष समय बनै, आजुक मनुष्यक मुख्य रूप छी। ओना, ब्रह्माजी विचारकेँ विचारि मने-मन मनेमे रखि नेने छल। मुदा समैयक प्रभाव

तँ देखथि रहल छथि। जे परिवारमे बेटा माए-बापकेँ कहैए जे तूँ हमरा की केलह? जँ पुतोहु एहेन बनौ तँ उचित छै, किएक तँ ओकर जन्मो आ सेवो ओकर माए-बाप केलकै-देलकै। सयान जेना पछाति दोसर घर आएल। मुदा बेटा जँ एहेन बनैए तँ जरूर कोनो बात विद्यालयक पढ़ाइक ज्ञान छीहे। सतरह बापूक सतरह रंगक कोयगि अछिए, जइमे सतरह रंगक बुधि-विचारक मनुष्यो बनबे करत।

आँखिक टुसकीसँ ब्रह्माजी रमणदार जायकेँ पुछलैन। जेनारस्तेसँ रमणदार जाय विचारैत आएल होथि तहिना। चाँइ-दे उठि कऽ ठाढ़ भऽ बजला-

“कान खोलि सभ सुनि लिअ, ब्रह्माजी जे एकरंगा मनुष्य गढ़बो करता तैयो ओ बेदरंगा हेबे करत जइसँ लड़ाइ-झगड़ा करबे करत। जइसँआइ धरिक इतिहासमे छोट-पैघ लगा कऽ चौदह हजार लड़ाइ भेल अछि, ओ भेल अछि कहियो देव-दानव कहि तँ कहियो रक्षा-राक्षस कहि। ई भेल अतीत, आगू अछि भविसि आ बीचमे अछि वर्तमान।”

रमणदार जाइक बात सुनि चन्द्रनाथक चुनियाएल मन कनी-कनी पुनियाए लगल। पुनियाइत चन्द्रनाथक मनक तामसमे पुनपन आबए लगलैन, बजला-

“अतीत भेल बेतीत आ बेतीतसँ जे अपरतीत भेल से भेल प्रीतक पूर्व अवस्था- परपरतीत।”

तही बीच नारदबाबा वीणा भनभनबैत समादे पहुँच गेला।परिवारोमे अहिना होइए जे जँ कोनो विचार करए परिवारजन बैसब आ जँ कियो बाहरी लोक आबि गेल तँ पहिने हुनकर विचार सभ सुनैत छी।

ब्रह्माजी नारदबाबाकेँ कहलैन-

“भने अहाँ आबि गेलौं। अहोभाग हमरा परिवारक। देश-दुनियाँक की हाल अछि?”

नारदबाबा पहिने वीणाक तारक जड़िकेँ कसैत दऽ कऽ ठीक केलैन। किएक तँ मनमे उठि गेल छेलैन, हाथमे जे वीणा अछिओछी कोन, मुहसँ शुकैवल सपरनिया सबहक आकि सरस्वती मैयाक हाथक? सारसत्वक मन रहितो असारसत्व केतए-सँ आबि जाइए! नारदबाबा अपन विचार मंथन जे करए लगला तइसँ वीणाक हाथ छूटि गेलैन आ मुँहक वाणीकेँ सेहो चपिआनी चऽ लेलकैनजइसँ ब्रह्माजीक द्वारा पुछल पछातियो नारदबाबाक मुँह बन्ने रहलैन।

नारदबाबाकेँ चुप देख बुधिनाथ टुसकी दैत बजला-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

“बाबा, अहाँ तीनू भुवनसँ टहैल-बुलि कऽ देख-सुनि ऐलौं हेन मुदा तैयो कहि मुँह?”

ओना, बुधनाथक इशारा नारदबाबा बुझि गेला मुदा बुधियार लोक लल ईहो नै आसान अछिए जे नीको बात कबियानकेँ समाधान नइ बाजल जाइए। अपन दिन-दुनियाँ देखैत नारदबाबा बजला-

“बौआ, पेटमे बियानक लहैर उठल अछि जइसँ बजैले मन तरस्तनाइए जून, मुदा अपन हारल, लोक, लोक लगमे बजबो केना करत!”

ओना, ब्रह्मचारी नारदबाबाक बियान सुनि मुस्की मारैत टुस्की दैत रहथिन मुदा बिबेकानन्दक नजैर बुधनाथपर टकिल छल आ धर्मदेवक नजैर रमनदास भायपर, जइसँ नारदबाबाक बात कियो ने सुनबे केलैन आ ने बुझबे केलैन। जहिना एकटा ऋषि अपन इमानकेँ धरम बुझि सत्यक बाट धेने चलैत रहल। एकटा शिकारी एकटा गाएकेँ खेहारने आबि रहल छल। गाइयक दशा देख हुनका मनमे दयाक सागर उमैड़ गेलैन। जान बँचौने गाए पड़ाएल जाइ छल। रस्ताक ओहलसँ आकि बोन-झाड़क ओहलसँ गाए शिकारीक नजैरसँ हटि गेल। शिकारी ऋषि लगमे आबि गाइयक जानकारीक बात पुछलकैन। स्पष्ट शब्दमे ओ ऋषि जबाब देलखिन जे जे देखलक से बाजत नहि आ जे बाजत से देखलक नहि, तहिना भेल। चुपा-चुपी देख रमनदास भाय बजला-

“से की बाबा?”

अपन मजबूरीसँ बेबस भेल नारदबाबा बजला-

“बौआ, बाल-बोधसँ कोनो बियान छिपाएब पाप छी। तँए तोरा सभसँ किछु ने छिपेबह।”

नारदबाबाक उमड़ल मनक सागरकेँ बिबेकानन्द, बुधनाथो, धर्मदेवो आ रमनदास भाय सेहो टकटकी लगा देखए लगला।

नारदबाबाक मन आगू-पाछू हुअ लगलैन। आगू-पाछू होइक कारण भेलैन अपन तीनू भुवनक रूप-चित्र देखब। नारदजीक रूप-चित्र छैन, जकरा कि तीन पद्धति—माने व्यास पद्धति, हनुमन पद्धति आ नारद पद्धति—एक पद्धतिक दाताक रूपमे नारदबाबा अपनो छैथ मुदा दोसर रूप जे देख रहल छथि तइमे गाम-घरक पुरुख-पातरसँ लऽ कऽ मौगी-मेहैर धरि बीचक छेलैन, जे नारदबाबा एक नम्बर झगड़लगौन छैथ। घरोबला आ घरोवालीकेँ सुख-चैनसँ रहऽ नहि दइ छैथ। एक गोरेकेँ कहै छथिन अहाँक पति तोरियाह भऽ गेल छैथ आ दोसरकेँ कहै छथिन पत्नी अहाँक देह धऽ चुकल छैथ। से ओ चाहे मनुष्य-भुवनक हुअए आकि देव-भुवनक।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

વ્નહ્માળી નાનદવાવાપન નળૈન શ્વેડ઼ઉૈના નળૈન શ્વેડ઼ાક્ષ્ગે નાનદવાવાક મન શ્વુનશ્વુનેઉૈના વળઉા-

"વૌશ્રા, નીક કાળ ᥒઁ નીક હેક્ષ્ગે શ્રછળિે શ્રયઉે કાળ કપ્પનો નીક ᥓડ ળાક્ષ્ગ્ણા ᥒહિના નીકો કાળ કેᥒૌ શ્રયઉે ᥓડ ળાક્ષ્ગ્ણ! વુહ્યિે ને પેવ નહઉ છી ળે નીક કી શ્રા શ્રયઉા કી ᥓેઉા"

યન્મદેવ઼ વયિ્યેમે ટપકઉ-

"ળેના?"

નાનદવાવા વળઉા-

"વુદ્યદેવ઼ શ્રા મહાવ઼ીન ળૈનક નામ સુનને હેવહક?"

"હઁ! ક્ષ્ગાહિસક કᥒિાવોમે પઢ઼ને છી।"

"દુનૂસન્ᥒ છઉા, ળહિના ᥓોળનમે સાદગીᥒહિના વ઼સ્ᥒ્નમે સાગદી શ્રાᥒહિના વ઼યિાનક સંગ વેવ઼હાનોમે સાદગી દુનૂકેઁ છેઉૈના શ્રપન વ઼યિાનક વ઼દ્યાિઉય઼મે શ્રય્યય઼નસઁ કેકનો પનહેળ નહિ કનૈ છઉા। ખુઉઉ કᥒિાવ ળકાઁ દુનૂક વ઼યિાનો શ્રા વેવ઼હાનો છેઉૈના।"

"હઁ, સે ᥒઁ છેઉૈન્હે।"

"દુનૂ એક્કે યુ઼ગમે ᥓેઉા, એક્કેનંગ દુનૂ યુ઼ગદ્નષ્ટા સેહો છઉા।"

"હઁ, સે ᥒઁ છેઉાહે।"

"મુદ્દા?"

"ય઼એહ ળે એકગોને 'વહુળન હᥒિાય઼' શ્રા દોસન ગોને 'સવળન હᥒિાય઼' માનૈ છઉા।"

શ્રોના, 'વહુળન હᥒિાય઼' શ્રા 'સᥓાળન હᥒિાય઼'ક ᥓાઁળમે યાનૂ ગોને– ક્ષ્ગમનદાન ᥓાય઼, યન્મદેવ઼, વુયનિાથ શ્રા વ઼વિ઼કાનન્દ–શ્રોહ્ના ગેઉા। ᥒઁએ મને-મન સᥓકયિ઼ો વ઼યિાનએ ઉગાઉા। ળેકના વુહ્ કિડ વ્નહ્માળી મને-મન મુસ્કી માનᥒિ નહઉ છઉા। સᥓ શ્રપને-શ્રપને વ઼યિાનમે ᥒેના શ્વઁસિ ગેઉા ળે વ઼ક્ᥒા કયિ઼ો નહ્વે ને કેઉા। ળક્ષ્ગસઁ યુપા-યુપી પસૈન ગેઉા

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

વ્રહ્માળીક મનમે જેઉેન ળે એના ળઁ કોનો વ઼ચિાર કરાએ વૈસી આ કયિો વળનહિંમે ને રહ઼ળા ળપ્પન વ઼ચિાર કી હએળ! નારદવાવાકેં ચરાયિ઼વૈળ વળળા-

"નારદળી! ઇન્દ્રાસનસઁ આદેશપત્ર આએઉ અછિ, આળુક મનુષ્ય નરિમવૈક, ળરમે઼?"

નારદવાવાક મન દુનૂ દ્ૃષ્ટસિઁ કડુઆએઉ છેઉેન્હે, પહિલ- ચઉેળ-ચઉેળ ળેળેક થાકિ ગેઉ છઉા ળરસઁ મન કડુઆ ગેઉ છેઉેન આ દોસર- ળીનૂ ભુવનક ચાઉ-ચઉેનકિ વેવહાર દેખ મન ળેના અગાયિા ગેઉ છેઉેન ળે વ઼ચિાર કરાયિ઼ા ગેઉ છેઉેના ઓહિ કડુઆએઉ-કરાયિ઼એઉ મનક વીચ વ્રહ્માળીક પ્રશ્ન છેઉેના નારદવાવા વળળા-

"આળુક ળેહેન દુનયિાઁ અછિ ળિરમે સમસઁ ઉત્તમ કોટકિ નરિમાણ (મનુષ્યક નરિમાણ) ઓ હએળ ળે નરિમાણાચીનકેં (ળેકર નરિમાણ કરવ) પૂળી (પાઇ) અનુકૂઉ માને ગરીવીમે નેપાઉ ભળહ દાનૂ અમીરીમે કનાડયિ઼ન સરહ દાનૂ પીઆ મોટર સાઇકલિક સવારીપર ચઢ઼, એક હાથમે મોવાઇઉ આ દોસર હાથમે સગિરેટ ચરાળઇસઁસવારીક હેમ઼્ડઉકેં છોડ઼અિન્હ-ગર્ઁહીસ વાટપર ચઉેળ રહળ, સમસઁ નીક નરિમાણ ચ઼એહ હએળા"

વ્રહ્માળી વુઝિ ગેઉા ળે નારદળી ખસિયિા કડ વ઼ચિાર દૈઉેના ઓના, હુનકો વ઼ચિારકેં સોઉહેઆના નહયિાઁ માનવ નીક નહયિઁ હએળા કયિક ળઁ અપને ને વૈસઉ-વૈસઉ નરિમવૈ છી, મુદા નારદળી ળઁ ળીનૂ ભુવનકેં ટહૈઉ-વુઉ દિખૈ છૈથ ળઁએ દેખઉહ વળઉ અછિ઼ અપન વ઼ચિારકેં વેવહારકિ વના વ્રહ્માળી વળળા-

"નારદળી, અહ઼ઁક વ઼ચિારસઁ સહમળ છી ળઁએ સમર્થન કરૈ છી, મુદા એહેન મનુષ્યસઁ ળઁ ળગ-હઁસાર હએળ! કહિુ છી ળે ળવ઼ાવદેહીમે છી કનિા"

વ્રહ્માળીક વ઼ચિાર સુનિ નારદળી અપન ક્રોધકેં મને-મન ઘોટએ ઉગઉા મુદા ળહિના ડુમૈવઉ વસ્તુ પાનમિ ળાઇને ડુમએ ઉગૈએ આ વનિુ ડુમૈવઉ અથાહે પાનમિ અઉગએ રહૈએ, ળહિના નારદવાવાક મનમે ઉઠૈળ રહૈના અપન પઉઉ હાડ઼ૈળ વળળા-
"ઉકો કી ઉક છી, ળહિના વનિુ સીગ-સીગ઼હૈટીક અછિ ળિહિના વનિુ નાઁગૈર-પુછડ઼ીક સેહો ળઁ અછિ, ળેહ઼ેના"

વ્રહ્માળી વળળા-

"વદનામી હએળ઼! "

નારદળી વળળા-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



"जे बदनाम करत ओ तँ अपने बदनाम अछि, तखन बदनामीक बात केकरा हएत? हमरे कियो पद्यतकिन्ता कहैए आ कियो घर-जरौन कहैए, तेकरा हम की करबै।"

ब्रह्माजीकेँ नारदजीक विचार जेना जँचलैन। जँचिते मनमे खुशी उपकलैन जइसँ मुँह मुस्कियाए लगलैन। मुस्की दैत नारदजी बजला-

"तखन?"

"तखन की! अहीकेँ लोक की बुझैए से बैसल-बैसल बुझबै, कियो बेइमान कहैए आ कियो नशाबाज!"

"से केना?"

"जेकरा घरमे बेटीक बाढ़ि अबैए ओ बेइमान कहैए आ जेकर बुधि भँसिया जाइ छै ओ भँगपीबा कहैए।"

"ऐमे हमर कोन दोख?"

"से अपना मने बुझने हएत। बजबै जे मायहम तँ दुनियाँकेँ नजैरमे नर-नारीक सृजन करै छी, तहिना बुधि-विवेकक सेहो करै छी। मुदा तइसँ लोक मानत। ओ थोड़े बुझत जे मकान बनौनिहार तँ पहुँच गेल, मुदा केतौ सीमेंट कम भेल आकि बालुए कम भेल, तइ दुआरे मकान बनौनिहार कामे हएत। ओ तँ कमो-बेसी करि कऽ मसाला तैयार करये लेत।"

ब्रह्माजी-

"तखन?"

नारदजी-

"तखन यएह जे केतौ बदनामी हएत तँ कहबै जे भाँग करी बेसी पीआ गेल छल। तँए, हानि थोड़े मानि लेब।"

शब्द संख्या : २०५४, तिथि : ०२नवम्बर२०१८

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

દિવાળીક દીપ

કાતિકિક પનરહ દિનિક અન્હારક (સામુહિકિ, સમૂહક દિનિ) અમાવસ્યા છી, આઇયે નાતુક પહિલ પહર આ દિનિક પાઁચમ પહરમે 'લક્ષ્મી પૂજા' આ દિનિક છઠમ-સાતમ પહર આ નાતુક દોસર-તેસર પહરમે 'કાળી પૂજા' સેહો છી। કાતિકિ માસક દુપ્પ-વન્યામે જરા દિનિ વૌઆએલ રહૌ। સાઁઝક આગમન હોઇતે ગોસાઁઇ સ્થાનસઁ (ગોસાઁઇ આગૂ) સઁ લઽ કઽ અપન ઘર-આેસાર, આઁગન-દરવજ્જાસહિત માલ-જાલક ઘર, થૈર, જલ-જલાશય આ યાર-યારા હોઇત સમુદ્રક ઘાટપર સેહો દીપ જરાત।

સૂર્યાસ્ત હોઇપર આવિ ગેલા આેના, સ્રમ કરૈક શક્તિ સેહો શરીરમે શેષ છલ આ જિનિગીક અગ્રમિ ક્રિયા સેહો શેષ છલહે। ક્રિયાક સરદર નિયમ યહએ ને અછિ જે એક કાજક પછાતિ દોસર કાજ ગોપી। તઁએ કટવી નિયમ નહિ અછિ સેહો વાત તઁ નહિયેં અછિ। આેહો તઁ અછિએ જે કાજક સઘનતાક વીચક જે જિનિગી અછિ, આેઇમે સમયાનુકૂલ આ આવશ્યકતાનુકૂલ ઘટવી-વઢવી કરએ પડૈએ। મુદા એઠામ ને ઘટવીક પ્રશ્ન અછિ આ ને વઢવીક, પ્રશ્ન અછિ જિનિગીકેં સુચારૂ ઢંગસઁ સંચાલિત કરૈક, જઇસઁ સમયપર દીપો જરા સકી આ પાવૈન સેહો મના સકી।

દરવજ્જાપર પસર દઇતે પત્ની વજલી-

"ક ૃષ્ણદેવજૈયા લછમી પૂજાક હકાર દઽ ગેલા અછિ।"

વજલૈ-

"કહલૈન નઇ જે અપને કમ્હિરોસઁ અવતિ હેતાતૈવીય ચાહો પીવ લેવઆમુહઁ-મુહો ગપ્પો જઽ જાએત।"

"જહિના માછી-મચ્છરક નંગ-ચંગસઁ મન કછમછાએ લૌએ તહિના ક ૃષ્ણદેવ જૈયાકેં કછમછાએલ દેખલૈન।" : પત્ની વજલી।

મનમે ભેલ જે અનેરે જે હૃગિાક હઁાગા મિનમે વન્હૈ છી સે નીક નહિ। સજ સાલ ક ૃષ્ણદેવ જાય કાતિકિક દિવાળી દિનિ લક્ષ્મીક પૂજા કરતિ છૈથ આ પાન-મખાન-મઠિઇક હકાર દઇતે છૈથ, જેવો કરતિ છી। તહિના આઇયો જાએવ। પુછલૈન-

"આૈર કિછુ વજલ?"

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पत्नी बजलि-

“रस्ते-रस्ते बजैत गेला जे एम्हरे होएत उदयलाल ऐठाम होएत घरपर जाएब।”

मनमे भेल जे साँझुक पहिल पहरक पूजा ‘लक्ष्मी पूजा’ छी तखन अनेरे जे गप-सप्पमे समय गमा लेब तखन समयपर पहुँच केना पाएब। मुँह बन्न कएने अपन साँझुक नियमित क्रियाकेँ अपनबैले मुड़ति नहि कि रस्तापर अबैत उदयलालपर नजैर पड़ल। जखन कानमे आबि गेल जे कृष्णदेव भायलक्ष्मीपूजाक हकारक मादे ऐठामसँ उदयलाले ऐठाम बढ़ि। भेलातखन तँ हम कृष्णदेव भाइक सारी हकारक जानकारी दऽ देबै तँ ओ दुनू सगि ने नीक हएत। बजलौं-

“उदयलाल, कृष्णदेव भाय ऐठाम आने साल जकाँ लक्ष्मीपूजा छियनि, हकार छल। पहिल साँझक पूजा छी, तँए समयपर पहुँचैले अखन बेसी गप-सप्प नहि करब। तोहूँ तैयार हुअ गआहमहूँ तैयार होइ छी। ओतै नियनसँ गप-सप्प करब।”

ओना, उदयलाल मजकिया लोक अछि, तँए ओकरो अपन भावनाक संग भावलोकक भवन छइहे। कठिन-सँ-कठिन आ गम्भीर-सँ-गम्भीर विचारकेँ मजाक-मजाकमे उड़ाइयो दइए आ पुराइयो तँ दइते अछि। उदयलाल अगुताएलमे बाजल-

“परसादमे पान-मखानटा बँटत आकि बिबको किछु बँटत?”

उदयलालक बात सुनि निहलापर दहल स्केक्व वा बीबीक संग बादशाहक जोड़ा लगाएब नीक नहि बुझि चुप रहलौं।

हमरा चुपी देख आकि अपन मनमे उदयलालकेँ कोनो उद्गार रहै से तँ बएह जानए, मुदा उदयलाल स्केर बाजल-

“भाय साहैब, पग-पग पोखैरकेँ जहिना कमल-कोसी खेलक आ पान-मखानकेँ परवासी भाय लोकैन खेलैन तहिना आब एकरा कितावे-कैसेटमे रहऽ दियौ।”

ओना, मनमे भेल जे बाजी- ‘कितावो पढ़निहार कि आब अछि, आब तँ कैसेटसँ बेसी लोक पढ़ैए जइसँ एते तँ लाभ भेबे करएल जे मिथिलाक शब्दमे अंग्रेजीक बाढ़ि एने शब्दकोश बढ़बे करएल अछि।’ मुदा स्केर भेल जे जखने किछु बाजब कि उदयलाल स्केर कोनो तेसर बात चालि दित। तँए, चुप्पे रहलौं। ओना, उदयलालकेँ समैयक पैबन्दी तँ नहि, मुदा काजक पैबन्दी रहने जनिगीक गाड़ीक गति असथिर छइहे।ओना, उदयलाल मजकियल चालि पकैड़ चलनिहार लोक जकाँ हँसी-चौल करिते अछि मुदा तेकरा ओ गपे-सप्प तक रखने अछि। गपोक कि कोनो आड़ि-धुर अछि लोकक मन जे थुरै छै से बजैए मुदा जनिगीक खेल तँ किछु और छी, ओ तँ गति-विधिक क्रियासँ चलैए, जइसँ उदयलालक जेहने बुधि सिकताएल छै तेहने काजो

सकताएल रहति छथि। तँए विश्वास पात्र अछिए ओना, एहेन दोख उदयकान्तमे नहि अछि, जइसँ मन दुखी भऽ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। कोन क्रियाक भेल केते उच्चारण हएत से बेयाकामे नइ छथि। एकर माने ओ स्कूल-कौलेज नइ देखलक सेहो बात नहियेँ अछि। हँ, एते जरूर छै जे व्याकरण नइ पढ़ने भाषा-बोधमे कनी कमी रहिये गेल छथि। ओना, पत्रिकामे पढ़ने छल जे अनसुनए लगसँ भाषा आ समाजक विचार होइत आएल जे केहेन शक्तिक खगता समाजकेँ अछि जइसँ ओकर जानिगी प्रगतिक पथपर गतिशील रहत। खाएर जे अछि तइसँ उदयकान्त आकि अपने कोन मतलब अछि। मतलब अछि औत्सुक्य जे क्रिया अछि तइमे केना समयपर पहुँच पूजामे शामिल हएब। जँ उदयकान्तकेँ दरबज्जापर छोड़ि अपने चलि जाएब सेहो केहेन हएत। हँसी-खुशीसँ उदयकान्त अपने ने आगू बढ़त।

तइ विचियेमे उदयकान्तक प्रात दिनुका विचार उठैत कऽ एकाएक मनमे चढ़ि जकाँ पाँच मिनिटकेँ नहि खसि पड़ल। अपना आगूमे खसल विचारकेँ देख मन तबितबि गेल। तबितबि ई गेल जे उदयकान्त सन नवजुवक जे आजुक युवाशक्तिक अंश अछि ओ तँ भगवानेक अंश जकाँ ने युवोमे युवाशक्ति अछिए। उदयकान्त समाजमे चाहे जे हुअए मुदा काजसँ बेसी काजक विचारकेँ विकछबैमे समय लगबैत अछि तँए काजक दोखक दोखी तँ अछिए मुदा हड़-हड़ाहो ठीक ओकरा नहियेँ कहल जा सकैए। हड़-हड़ाह ओ भेल जे समय अबैसँ पहिने चान जकाँ छुटि कऽ तैयारो भऽ जाइए आ पकैसँ पहिनहि पकि कऽ हड़िये जाइए। संजोग बनल उदयकान्त बाजल-

“पाँच मिनिटमे तोहू तैयार भऽ जा आ हमहूँ तैयार भऽ जाएब। मुदा तैयार भेल पछाति हम तोहर रस्ता नइ ताकब। सोझे कृष्णदेव भाय ऐठाम चलि जेबह।”

ओना, उदयकान्तक समैयक बात्ह ओतेक सक्कत नइ बुझि पड़लमुदा संजोगो तँ संजोग छी। जँ कहियो ओकरा रस्तामे एतबो पुछनहिऐ भऽ जाइ जे ‘भाय! बड़ अगुताएल देखै छिऐ’, तेकरा जबाव ओ कखन तक देत तेकर ठीक नहि, तँए बात्ह हल्लुक बुझि पड़ल। मुदा जँ कहियो नइ भेटतै तँ जहिना बाजल तहिना ओ आगू बढ़ि कृष्णदेव भाइक दरबज्जापर पहुँचते दरबाजो जकाँ घरबाजो बनि बोकियेबो नइ करत सेहो बात नहियेँ अछि।

पत्नियो सभ बात सुनि मने-मन अपनो काजक आ हमरो काजक गोटा-गपसा बैसाइये भेने छेली। जँ कहितो अबरोध मनमे होइतैन तँ बजबे करितथि, मुदा से सभ कहितो ने अप्पन बना लिअल। एकर स्पष्ट माने भएल ने भेल कृष्णदेव भाइक ऐठाम समयपर पहुँचबक आदेश दइये देलैन।

जहिना पाँच मिनिटक समय उदयकान्त देने छल तहिना तैयार भऽ घरसँ निकिलली। ओना, कहब जे उदयकान्तक घर कृष्णदेव भाइक घरसँ लग अछि तँए पहिने पहुँचत सेहो बात नहियेँ अछि। कहए तँ जेते समय हमरा ऐठामसँ उदयकान्तकेँ

जेबाकाल लागत तेतबे समय ने हमरो जाइमे लागत। मुदा समय तँ ओहिसँ पहिने निर्धारित भऽ गेल, तँए मोटा-मोटी दुनू गोटेकेँ एक्के रंग समय भेटल।

जहिना कृष्णदेव भाय ऐठाम हम पहुँचलौं तहिना उदयनाथ सेहो पहुँचल। दरबज्जापर पहुँचैसँ पहिने दुनू गोटेक भेँट भऽ गेल। संगे दुनू गोटे दरबज्जाक आगूमे प्रवेश केलौं। कृष्णदेव भायकेँ देखलैन जे दुनू परानी हल-चल, हल-चल कऽ रहल अछि।

हलचलीमे पड़ल दुनू परानीमे सँ कनिको नजैर हमरा दुनू गोटेपर नहि पड़ैन। ओना, अपना बुझि पड़ल- भलेँ दुनू परानी कृष्णदेव भाइक नजैर हमरा सभपर नहि पड़ल हुअए मुदा सभकेँ अपन- अपन नजैरिक संग आँखियो तँ अछिए। जइसँ सोलहन्नी ईहो मानि लेब जे कृष्णदेव भाइक नजैर नहियेँ पड़ल हेतैन सेहो मानब ठीक नहि किएक तँ आँखि रहितो कखनो चश्मा लगा देखैए आ कखनो बिनु चश्मेक ओकरासँ बेसी देखैए। मन असमंजसमे पड़ि गेल। मुदा तइ बीचमे उदयनाथ बाजल-

“गौरी भाय, भरिसक कृष्णदेव भाइक नजैर अपना सभपर नै पड़ैन।”

बजलौं- “केना बुझै छहक?”

उदयनाथ बाजल-

“जहिना अपना सभ हकरायल भेलिऐ तहिना ने कृष्णदेवो भाय हकबाह भेल। जँ कनियोँ नजैर पड़ल रहितैन तँ ओ जरूर किछु-ने-किछु कहबे करितथि।”

उदयनाथक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल। एना भेल जे कृष्णदेव भाय घरवारी छैथ, हुनका नजैर नहि पड़ैन मुदा अपनो दुनू गोटे तँ समाजक संग हकरायल छी, तखन किए ने अपन हाजिरी हुनका लग दर्ज करा दी। बजलौं-

“उदयनाथ, अपना सभ आबि कऽ केतौ चुपेचाप बैस जाएब सेहो नीक नै हएत, तँए अपन उपस्थिति दर्ज करा लिअह।”

उदयनाथोक मनमे सएह विचार उठि रहल छेलइ। स्वीकारैत बाजल-

“कृष्णदेव भाय लग चलि कऽ चेहरा देखा देल पछाइत केतौ बैस कऽ गप-सप्प करब।”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

આગૂ વઢ઼િ ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાય લગ દુનૂ ગોટે પહુઁચલૌ। પહુઁચતે ઉદયલાલ ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાયકેઁ કહલકૈન-

“ઞાય સાહેવ, હાથી ચઢ઼િ અહાઁ ગૌન પુછને છી જે ભૌજી સન સંગી હાથ લાગલ।”

ઓના, ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાય પત્ની દિસ તાકએ લાગલ મુદા મુહસઁ કછુ વકાન નહિ ફુટલૈન। વજલૌ-

“ઞાય, કેતે કાજ પછુઆએલ અછિ?”

ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાય વજલા-

“સમયાનુસાન કાજ અપન નસ્તેપન અછિમુદા સૂન્યાસ્તો હોઇમે દૂ-ચાન મિનિટ વાઁકી અછિ।”

ઉદયલાલ વાજલ-

“ઞાય સાહેવ, એઠામ હમના સભકેઁ નહને અહૂઁ દુનૂ પનાનીકેઁ કાજમે[3] કછુ-ને-કછુ વથિતે હએત આ તૈસંગ હમહૂઁ દુનૂ ગોટે શનમાએલ જે જેઠ ઞાઽ કઽ ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાય દુનૂ પનાની પ્પટિ નિહલ છૈથ આ હમ સભ ઠાઢ઼ ભેલ મુઁહ દેખૈ છી।”

ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાય વજલા-

“તોહન કી વિચાન?”

ઉદયલાલ વાજલ-

“અહાઁ દુનૂ પનાની અપન પૂજાક તૈયાની કનૂ આ હમ દુનૂ ગોટે દનવજ્જાક દુઆનપન વૈસ હકનયિ। સવહક આગવાની કનવ।”

ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાય કછુ ને વજલા। વુઝિ ગેલૌ જે આદેશ ભેટ ગેલ। દુનૂ ગોટે દનવજ્જાક આઁગનમે કુનસીપન વૈસ ગપ-સપ્પ કનૈક વિચાન કેલૌ। ઓના, ગપ-સપ્પક ક્નમમે ઉદયલાલ કપ્પનીકાલ હુહુઆન જકાઁ વુઝિ પિડ઼લ। મુદા વાસ્તવમે ઓ ગહિનગનો આ ગમ્ભીનગનો ત઼ અછિ। વજૈક ઢંગ ભઅઁ ઓ વદલને અછિ, સદિખાલ હઁસા-હઁસિ વજવો કનૈએ આ ગમ્ભીન-સઁ-ગમ્ભીન વિષયકેઁ હઁસીએ-મે ઉડ઼ાઇયો દઇએ આ પુનાઇયો ત઼ દઇતે અછિ।

સૂન્યાસ્ત ભેલ। વજિલીક ઇજોતસઁ સૌંસે જગમગાએલ। ક઼ૃષ્ણદેવ ઞાય સેહો ઘન-આઁગનમે વજિલી લગૌનહિ છૈથ। તહૂમે આઇ વેસી ઓનયિાન સેહો કેનહિ છૈથ। વજલૌ-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

“उदय, बुझाबि पड़ैए होएत जेँ तूँ उमेरमे छोट छह मुदा तूँ बहुत होशियार छह। ठीक लगैमे हँसी-हँसी किऽ बाजि रहल छह, मुदा?”

‘मुदा’ सुनि उदयलाल जेना एकाएक गम्भीर भऽ गेल, एकाएक जेना गम्भीरता हृदयसँ ऊपर आबए लगलै, तहिना धरतीमे गम्भीरता एने ओकर संवेदनशक्ति ऐ कुरियाशील भऽ जाइए जे ओइमे जाँगक बीआ छीटू आक विधुआक, ओ बड़बड़ा कऽ जनैम जाइए तहिना उदयलालमे बुझि पड़ल ओना, उदयलाल बाजि किछु ने रहल अछि मुदा जहिना कुरियाएल मेघ समुद्रमे लटैक अपन संगी-समुद्रसँ उठैत बादल-केँ पकैड़ संगे बढ़ि होइए तहिना बुझि पड़ल बजलै-

“उदय, बजितौ बीलक इजोतकेँ दिवालीक दीप?”

जहिना समुद्रमे तुफान उठैए, धारमे बाढ़ि उठैए, पोखैर-इनारमे पानिक उछाल उठैए तहिना उदयलालक मनमे जग-तुफान उठल। उठिते बाजए लगल-

“जैयारी, तप्पत ने जय-श्री (जय+श्री) होइए जप्पत सभ जाय एक-मुँह, एक-बोल बना एक-एक बरियाती आ एक-एक काजो करैत आगू दिसिक समय दिसि बढ़बा लेल ने केतौ हृदयमे दीप जरैत आ केतौ बजितौक प्रकाशसँ प्रकाशित होएत। जइसँ जे दीपक ज्योति पवित्र छी ओ तर पड़ि जाइत आ बजितौक प्रकाशक पाबैन जगजगिआर होइत रहत।”

ओना, धरमागती बुझी तँ उदयलालक बरियार सोलहन्नी लेल बुझलै, मुदा ओकर बाजीक जे प्रवाह रहै ओकरा तेकर दिशा-हीनो करब ठीक नहि बुझि बजलै-

“हँ, से?”

जेना हमर बातकेँ अवडेरैपर उदयलाल ठीक ठेकाबैपल तावा जहिना पानिक छटिका ठीक रहए तहिना ठीक ठेका। ओना, कहब जे पानियोंसँ पातर ओस होइए जेकरा टुजा अपन जीवनाभूत बना साथपर तावैर बेरे रहैए जाबैत सुरुजक प्रकाश ओकरा अदृश्य नहि कऽ दइत मुदा से सभ बात नहि छल, अपना मनमे दिवालीक दीपक ज्योति पवित्र बनल छल। उदयलाल बाजल-

“आइ आयाकातिक सीमापर छी। आगू सेहो आया शेष अछि कातिककेँ लोक तेरहम मास कहै छइ कि? कोनो माससँ तँ मासक गिनिती शुरू होइ तँ ओ मास तेरहम जइये जाइत।”

मनमे जेना घोड़दौड़ शुरू भेल, तहिना भऽ गेल। हिसाब तँ ठीके उदयलाल कहैए मुदा बुझल तँ कातिकिया अछि, जेकरा लोक तेरहम मास कहैए। आन-आन मासकेँ कहाँ कियो 'तेरहम'मे गिनिती करैत छथि, अपन बरियारकेँ नहियेँ बाजब ठीक बुझलौं।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

कहि ने उदयलाल अपन पंचैती अपने करैत छलत। मुदा उदयलालक बात हम नीक जकाँ सुनबै आकि अनठाएल-मनठाएल जकाँ सुनबै बुझबै, सेहो ने उदयलालकेँ इशारासँ बुझाएब जरूरी अछि। तँए उदयलालेक स्वरमे अपनो स्वर मिलबैत बजलौं-

“हँ, से तँ कहिते अछि।”

उदयलाल बाजल-

“कातिकमास तँ किसानी जिनगीक ओ मास छी, जे बरसातक बिखिबिखिसँ तरह-तरह उबड़ल रहैए। बिखिबिखिक अनेको रूप अछि, केतौ बाढ़िक कटनिया, तँ केतौ अन्हर-तूफानक संग हरबाहिक जड़सँ जान-मालक संग, चीज-वस्तुक क्षति होइए, तँ केतौ बाढ़ि बिनु गामक-गामकेँ मेटा दइए, इत्यादि-इत्यादि। तँए, कातिककेँ दोबर भारी मास मानल गेल अछि। ओहुना ओसलक उपजक हिसाबसँ सेहो चैतकि रब्बी-राइक पछाति उपजक आठम मासक रूपमे सेहो अछि।”

तैयो कृष्णदेव भाय सेहो लगमे आबि बजला-

“पूजाक समय भऽ गेल, तँए अहूँ सभ तैयार भऽ जाउ। जखने हम शंख फूकब कि अहाँ सभ देवस्थलपर पहुँच जाएब।”

ओना, उदयलालोक मनमे रहबे करै जे कृष्णदेव भायक ऐठामक पूजामे शामिल होइले एबै हेन, हुनकर कृतकिर्प छथिन तँए ओ अपना बहिनि जे करता, हम सभ तहीमे ने पाछू-पाछू संग पुरबैत। बजैक क्रममे उदयलाल मस्तीसँ झूमि रहल छल, जहिना संगीतक अन्तिम मोड़पर एला पछाति संगीतज्ञ झूमए लगैए तहिना। मुदा कृष्णदेव भायक बातीक अन्तिम लड़ीक कड़ीमे कड़ी जोड़ि उदयलाल बाजल-

“औहुकेँ पनरहम दिन कातिकक पूर्णिमा हएत, जइ दिन कातिक अपन अन्तिम सीमापर पहुँच जाएत-बहिनक पावैन-सामा-चकेबा-करैत अगहन दिस (चानक मास) अग्रसर हएत।”

उदयलालक मुँहक मीठगर बोल सुनि-सुनि मनमे जेना मीठ-मीठ सुआद आबए लगल। ओना, मनमे ईहो होइत रहए जे कहीं बीचेमे ने कृष्णदेव भाय शंख फूकि दैथ जइसँ आगूक बिचारक बाट रूकि जाए! उदयलाल मने-मन ठेकिया लेलक जे जाबे कृष्णदेव भाय शंख फुकैक सुर-सार करता तइ बीचेमे अपन बिचारकेँ सीमापर पहुँचा देब। मुदा तइ बीचे बजा गेल-

“उदयलाल, आइ तँ अनहारियो पखक ने पाबैन छी?”

जहिना प्रश्न उठलै तहिना उदयलाल जवाब दैत बाजल-

“अन्हरिया पखक सामूहिक रूपक अन्तिम दिनक पर्व छी। अन्हारमे सभ किछु हेरबे नइ करैए, भेटबो करैए बएह भेटब छी ज्योति पुंज। जे पबैक पर्व छी दिवाली दिनक दीप पर्व।”

ओना, उदयलालक विचार सुनि मनक कूह-काह छँटए लगल मुदा कूहो-काह की साधारण अछि, ओ तँ मैल वस्त्र जकाँ अछि, जेकरा जेते बेर साबुन लगा धोबै तेते ओकर मैल छँटैत जाएत आ चमक अबैत जाएत। मुदा तैसंग मनमे ईहो शंका तँ उठिये रहल छल जे तँए बूढ़-सुढ़ैक संग करैत समय चाही, जे अपना गतिये तेना पकड़ने जाइए जे ओकरा पकैड़ चलब कठिन अछि। ओना, विचारो आ क्रियोक अपन गति अछिए मुदा से गति निर्भर करैए कर्तापर। जेहेन कर्ता भर्ता करैए तेहेन धर्ता धारण करति अछि।

बजलौं-

“उदय, अहीं प्रकाश पुंजकेँ?”

आगूक विचार पेटेमे छल कि तइ बिचेमे उदयलाल आगूक विचारकेँ लोकैत बाजए लगल-

“भाय, पहिल साँझ लक्ष्मी पूजा छी, दिवा रातिम काली पूजा सेहो हएत आ भोर होइते गोवर्धन पूजाक आगमन सेहो भइये जाएत। भाइ-जाइक घरो आ बहनोमे दुर्गा-धारणक संग श्रुति-पातसँ भरल-पूरल बधारक पूजा सेहो छीहे।”

बजलौं- “हँ, से तँ छीहे!”

उदयलाल बाजल-

“तँए कि पाबैन विसर्जन भऽ जाएत। प्रात भने दोसर दिन भरदुतिया छी, जे भाए-बहिनिक भरि-पुरैक पाबैन अछि। सभ बहिनि नौतहारिनी भेलि आ सभ भाए नौतपुरा भेल।”

ओना, जइ सुढ़िये उदयलाल बजै छल तइ सुढ़िये अपने नइ बूझै छेलौं मुदा भकुआएल लोककेँ जेना-जेना भकुपन करैत जाइ छै आ मन स्थीर होइत जाइ छैतहिना हुअ लगल, जइसँ उदयलालक विचार सुनैमे नीक लगिये रहल छल। बजलौं-

“हँ, से तँ छीहे!”

उदयलालक विचारकेँ जहिना सह भेटल, तहिना सहटैत सहीटमे आबि बाजल-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

“भाय, परिवारक आँगनक बीच आँगनमे अरिपन सारल आसन ओछा दुनू हाथमे सिन्दुर-पीठार लऽ पानक पात पसारि श्वेत-मखान आ अच्छतसँ दुनू भाए-बहिन अपन सम्बन्धकेँ पूरति करैत छैथ।”

बजलौं-

“ई तँ अदौसँ पूजति होइत आबि रहल अछि।”

उदयलाल बाजल-

“भाए-बहिनक पावैनिक संग चित्रगुप्त पूजा सेहो छी।”

बजलौं तँ किछु नहि, मुदा मुड़ी जरूर डोला देलिऐ। जेना उदयलालकेँ अपन बिचारमे सहक संग समर्थन सेहो भेटल होइ तहिना भेलइ। मुस्की दैत बाजल-

“भरदुतियाक प्रातेसँ छठि पावैनिक विधि शुरू हएत। माछ-मडुआ बाड़बसँ विधि कराण शुरू होइत उगैत-डुबैत दुनू सुर्जक अर्घदान होइत, सामा-चकेबा सम्बन्धक सोहर-समदाउनक शुरुआतक संग अरिपनक बीच हर-कोदारि, खुरपी-हँसूक संग खराम पूज्य होइत देहयानी देवक आगमन बीच देवोत्थान (देवउठान) सेहो होइते अछि। तेकर लगले पछाइत हनुमान जन्मोत्सवक लगले कोसी-कमलाक स्नानक संग सामा-चकेबाक कातिक उसरन होइए।”

तही बीच कृष्णदेव भाय महाभारतक कृष्ण जकाँ शंख फूकि देलखिन। दुनू भाँइ उठि कऽ विदा भेलौं।

शब्द संख्या : २४२२, तिथि : २९ अक्टूबर २०१८

---

[i] पचीसी

[ii] शासनक आदेश

[iii] सोलहअना

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

[𑒐] 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹

𑒌 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 ggajendra@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨- 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰

𑒮𑒱𑒨𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒱𑒯𑒲-𑒨𑒴𑒩𑒰

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒠𑒴-𑒁𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒠𑒴𑒩𑒲𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒱𑒯𑒾𑒩𑒰। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒛𑒲𑒪𑒩𑒏 𑒒𑒩 𑒧𑒱𑒯𑒾𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒕𑒻𑒢। 𑒯𑒿, 𑒯𑒿 𑒫𑒋𑒯 𑒛𑒲𑒪𑒩 𑒖𑒹𑒞𑒋 𑒧𑒼𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒞𑒹𑒪 𑒂 𑒔𑒰𑒅𑒩-𑒑𑒯𑒳𑒧 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒛𑒲𑒪𑒩𑒹𑒏 𑒒𑒩𑒏 𑒥𑒑𑒪𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰। 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒵𑒣𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏𑒰 𑒕𑒟𑒱𑒢। 𑒒𑒩𑒼𑒏 𑒮𑒳𑒐𑒲 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒻𑒟। 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲 𑒂 𑒯𑒧 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒲 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒧𑒹 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲 𑒮𑒞𑓂𑒩𑒏𑒲 𑒄 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒟 𑒖𑒹 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒥𑒱𑒔𑒹𑒧𑒹 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒰𑒿𑒔𑒲 𑒖𑒰 𑒍𑒞𑒋𑒮𑒿 𑒙𑒲𑒔𑒩𑓂𑒮 𑒙𑓂𑒩𑒹𑒢𑒱𑓀𑒑 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪। 𑒥𑒰𑒠𑒧𑒹 𑒥𑒲.𑒋. 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒜𑓃𑒪। 𑒞𑒿𑒋 𑒍 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒻𑒟। 𑒯𑒧 𑒄𑒢𑒑𑒱 𑒢𑒻 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿𑒋 𑒣𑒜𑓃𑒱-𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒏𑒩𑒲 𑒔𑒩𑒥𑒻 𑒕𑒲। 𑒁𑒐𑒢𑒼 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲 𑒖𑒹𑒞𑒋-𑒏𑒞𑒾 𑒦𑒹𑒙𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒏𑒳𑒬𑒪-𑒏𑓂𑒭𑒹𑒧 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒋।

𑒧𑒰𑒞𑓂𑒨 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒑𑒣 𑒕𑒲। 𑒯𑒧 𑒂 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠𑒲𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒦𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲- 𑒧𑒠𑒢𑒖𑒲 𑒩𑒰𑒬𑒢 𑒂𑒢𑒋 𑒛𑒲𑒪𑒩 𑒍𑒞𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒧𑒠𑒢 𑒦𑒰𑒃 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒻𑒟 𑒂 𑒖𑒃 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏𑒰 𑒕𑒟𑒱𑒢 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒧𑒠𑒢𑒼 𑒦𑒰𑒨 𑒕𑒻𑒟। 𑒯𑒧 𑒂 𑒧𑒠𑒢 𑒦𑒰𑒨 𑒛𑒲𑒪𑒩 𑒍𑒃𑒚𑒰𑒧 𑒥𑓂𑒩𑒹𑒨𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒩𑒯𑒲, 𑒛𑒲𑒪𑒩 𑒩𑒖𑒱𑒭𑓂𑒙𑒩𑒧𑒹 𑒂 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒬𑒢𑒏 𑒐𑒰𑒢𑒰𑒣𑒴𑒩𑒲 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒧𑒠𑒢 𑒦𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒪𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒻 𑒥𑒖𑒹𑒪𑒻𑒟 𑒞𑒿𑒋 𑒯𑒧 𑒛𑒲𑒪𑒩𑒹 𑒍𑒞𑒋 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒾𑓀। 𑒖𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒬𑒢 𑒪𑒪 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒠𑒱𑒮 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒖𑒹 𑒧𑒠𑒢 𑒦𑒰𑒨 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒯𑒧 𑒮𑒛𑓃𑒏𑒹𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒌-

“𑒧𑒠𑒢 𑒦𑒰𑒨, 𑒑𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒢𑒻 𑒖𑒰𑒋𑒥?”

𑒧𑒠𑒢 𑒦𑒰𑒨 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒟-

“𑒂𑒅-𑒂𑒅 𑒔𑒪𑒻 𑒕𑒲।”

𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒹𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒟। 𑒍 𑒏𑒯𑒪-

“𑒣𑒰𑒿𑒔𑒹 𑒧𑒱𑒢𑒱𑒙 𑒂𑒍𑒩 𑒩𑒴𑒏𑒱𑒨𑒾 𑒧𑒠𑒢𑒖𑒲 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒢𑒹 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒻𑒟।”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

तखन देखलिऐ जे त्रिविक्रम जीक बेटा दू कप चाह नेने आएल। एक कप चाह त्रिविक्रमजीक हाथमे देलकैन आ दोसर कप मदन बाबूकेँ। मुदा त्रिविक्रमजी हमरा चाह पीबैले आग्रह नै केलैन। हम चोट्टे डीलरक दरबज्जापर आबि बेंचपर बैस गेलौं।

हम सोचए लगलौं, मदन बाबू शिक्षक छैथ तँए हुनका बजा कऽ त्रिविक्रमजी चाह पियौलकैन आ हम साधारण किसान छी तँए हमरा बैसबाको लेल आग्रह नै केलैन। जखन कि त्रिविक्रमजी हमर संगीए छैथ!

हमरा त्रिविक्रमजीक बेवहारक बड़ दुख भेल। हम सोचए लगलौं- एकर बदला त्रिविक्रमजीसँ केना लेल जाए। हम बहुत सोच-विचार केलौं।

परातेह दिनक बाद त्रिविक्रमजी मदन बाबूकेँ खोजए हुनका दरबजपर गेलाह मुदा मदन बाबू दुनू परानी नेपाल गेल छला। त्रिविक्रमजी जखन आपस भेला तँ हमरा देखला तँ मोटर साइकिल रोकि कऽ मदन बाबूक सम्बन्धमे पुछए लगला। हम सोचलौं आइ गर अछि, किए ने ओइ दिनक बदला सधा ली। हम बड़ आदरसँ त्रिविक्रमजीकेँ अपना दलानपर लऽ जा कऽ बैसौलयैन आ कहलयैन-

“मास्टर साहैब, कनेक रूकू आँगनसँ भेल अबै छी।”

आँगन जा पत्नीकेँ कहलयैन-

“कनी दू कप नीक चाह बनाउ। बुच्ची केतए अछि?”

पत्नी इशारासँ पुबरिया घर देखा कहलैन बैस कऽ पढ़ैए। बेटी मैट्रिकिक विद्यार्थी छी। तावए ओ लगमे आबि कहलक-

“की बाबूजी?”

एकटा पचसटकही दैत एकटा बीकाजी भुजियाक पैकेट आ एकटा नमकीन बिस्कुटक डिब्बा आनए कहलिऐ। पुन: पत्नीकेँ कहलयैन-

“जखन बुच्ची दोकानसँ भुजिया आ बिस्कुट आनि कऽ दैत तँ दूटा प्लेटमे भुजिया आ बिस्कुट दऽ दरबज्जापर पठाएब।”

हम दरबज्जापर चलि गेलौं। एतए त्रिविक्रमजीसँ दुनियादारीक गप-सप्प करए लगलौं। किछुकालक बाद हमर बेटी दूटा प्लेटमे भुजिया आ नमकीन बिस्कुट दऽ गेल। हम अपना बेटीसँ कहलिऐ-

“बुच्ची चाचाकेँ प्रणाम करहुन।”

हमर बेटी त्रिविक्रमजीकेँ प्रणाम कऽ आँगन चल गेल। आँगनसँ एक जग पानि आ दूटा ग्लास आनि टेबुलपर रखि गेल। हम त्रिविक्रमजीकेँ एकटा प्लेट बढ़बैत कहलयैन-

“लिअ मास्टर साहैब, कनेक पानि पीब लिअ। पछाइत चाह पीब।”

तैपर त्रालिकजी बाजल-

“चाह तँ गामेपर सँ पीब कऽ आएल नहि।”

हम कहलिऐन-

“चाहो कोनो पेटभरा चीज छी। जे एकबेर भरिपेट पी लेलौ तँ फेर आ समयेपर पीअब।”

त्रालिकजी किछु लजाइत प्लेट हाथमे लेलैथ आ खाए लागल।

जावे हम दुनू गोरे भुजिया-बिस्कुट खा पानि पीबी तावत बेटी एकटा ट्रेमे दू कप चाह दऽ गेल। हम ट्रेमे सँ एकटा कप चाह उठबैत त्रालिकजी दिसि बढ़बैत बाजलौ-

“लिअ मास्टर साहेब, चाह पीबू।”

ओ फेर लजाइते चाह लेल। चाहक बाद हमरा बेटी पान दऽ गेल। दुनू गोरे पान खेलौं। हम त्रालिकजीसँ कहलिऐन-

“मास्टर साहेब हम तँ कहब जे जलखै खा कऽ जइतौं तँ नीक होइतए।”

तैपर त्रालिकजी बाजल-

“जलखै, चाह, पान सभ भऽ गेल आब कोन जलखै हएत।”

ई कहैत ओ झटझटिया स्टार्ट कऽ चलि गेल।

तीन दिनक बाद जखन मदन भाय त्रालिकजीकेँ भेटलखिन तँ त्रालिकजी मदन भायकेँ सभ बात बतेलखिन आ कहलखिन-

“हम ननदजी लग बड़ लज्जित छी। ओइ दिन अहाँकेँ डेरा ओइठामसँ बजा कऽ चाह पियेलौ मुदा ननदजीकेँ बैसबाको लेल आग्रह नै केलिऐन। तेकरे बदला ननदजी हमरा जलखै आ चाह-पान करा कऽ लेलैन। एकरे कहै छै ‘सियानक माथ दही-चूरा।’”

८

शब्द संख्या : ६८६

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

દહેળ પાપ છી

મોનકા ઉપ્પનાહા સમય નશ્ર વળૈ૧। ભ૭વાવૂક દ૭ાન વેસ સાશ્ચ-સુથડ઼ા મેઠ નહ્ય। યૌકીપન નવ઼કા ળાળીમ વછિૈ૭ નહ્ય શ્રા નવાક પ્યો૭ ભાગા૭ સનિમા સેહો ૭ગૌ૭ નહ્ય। દ૭ાનક નયિ્યઁમે સ્નાની યૌકીપન એક વાઌ્ટીન ળ૭ શ્રા એકટા ભેટા સેહો નાપ્પ૭ નહ્ય। દ૭ાનક શ્રોસાનાપન પઁયટા કુન્સી સેહો નાપ્પ૭ નહૈ શ્રા દ૭ાનક નમીનમે એકટા વડ઼ાક ટેવુ૭ શ્રા ટેવુ૭ક દુનૂ માગ દૂ-દૂટા કુન્સી ભાગા૭ નહ્ય।

ભ૭વવૂક નળૈન વેન-વેન દેવા૭મે ટઁગા૭ ઘડ઼ીપન યભ ળાશ્ન નહૈના શ્રો સોયૈ છ૭ા- શ્રાઙે વળેક નાશ્રો યુનયુન વાવૂ કહ્ને છ૭ા શ્રા શ્રપ્પન નશ્ર વળ નહ્ય શ્રછિ। શ્રપ્પૈન નક શ્રો સમ નૈ એ૭ા હેન, પના નહિ કી મઽ ગે૭શ્ર। કયિો દોસન ભડ઼કીવ૭ા નૈ નઁ ઉપનૈહ્ કઽ દે૭ક।

ભ૭વાવૂ ઈ સમ સોયનિ છ૭ાક કિ એકટા શ્રપાયી મોટન સાઽ્કભ શ્રાવિ દ૭ાનક શ્રાગઁમે નૂક૭ા શ્રોશ્ર મોટનસાઽ્કભસઁ યુનયુન વાવૂ શ્રા એક ગોને શ્રાનો ઉનન૭ા।

ભ૭વાવૂ વળ૭ા-

“શ્રાએ૭ ળાઉ, શ્રાએ૭ ળાઉ, હમના નઁ યનિ્ના મઽ ગે૭ નહ્ય ળે એોક દેની કયિક મઽ ગે૭ૈન।”

નૈપન યુનયુન વાવૂ હાથ ળોડ઼ૈન વળ૭ા-

“નમસ્કાન!

ભ૭વાવૂ, નમસ્કાનકળવાવ દૈન વળ૭ા-

“નમસ્કાન! ”

યુનયુન વાવૂ શ્રપન સંગવે દિસિ ઽશાના કનૈન કહ્૭પ્પનિ-

“ઈ હમન મનિ્ન છૈથ, ગોપી વાવૂ। ઉ વ઼ વિવાવૂવનહોસઁ સેવા નવિૃન પ્નયાનાધ્યાપક, હનિકો ઘન મૌશ્રાહોએ છૈના”

ભ૭વાવૂ ગોપી વાવૂકેઁ હાથ ળોડ઼ૈન વળ૭ા-

“શ્રહો માગ્ય! નમસ્કન-નમસ્કાન! ”

ગોપી વાવૂ વળ૭ા-

“નમસ્કાન।”

ભ૭વાવૂ વળ૭ા-

“હોઉ, પસ્ન-હાથ યોઽ ળાઽ ળાઉ।”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒯𑒰𑒟-𑒣𑒋𑒩 𑒡𑒼 𑒏𑓄 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒮𑒲𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒰। 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒢𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒹 𑒢𑒻 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒱𑒌।”

𑒞𑒻𑒣𑒩 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒏𑒯𑒥 𑒞𑒐𑒢 𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒥। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒋 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒢𑒻 𑒞𑒿 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒐𑒩𑒰𑒣 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢।”

𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒏𑒲 𑒣𑒳𑒔𑒻 𑒕𑒲। 𑒞𑓀𑒑 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒯𑒹𑒢। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒩𑒰𑒞𑒳𑒯𑒰𑒩 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒥𑒱𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒂𑒖𑒳𑒏𑒹 𑒑𑒣 𑒪𑒱𑒃, 𑒚𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒜𑓃𑒹 𑒮𑒰𑒞 𑒥𑒖𑒹 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒪𑒹 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒪𑒾𑓀 𑒏𑒱 𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒥𑒪𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒳𑒪𑒹𑒙 𑒧𑒼𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪𑒮𑒿 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒏𑒳𑒙𑒧𑒻𑒞𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒠𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒖𑒰𑒞𑒱-𑒏𑒳𑒙𑒳𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒹𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞-𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒩𑒯𑒞। 𑒞𑒴𑒯𑒴𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒦 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒕𑒲। 𑒞𑒿𑒋 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪।”

𑒃 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒋 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒖𑒰𑒞𑒲𑒖 𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙𑒧𑒹 𑒦𑒳𑒖𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒏𑒰𑒖𑒴, 𑒏𑒱𑒮𑒧𑒱𑒮, 𑒧𑒐𑒢𑒏 𑒂 𑒢𑒳𑒢𑒑𑒩 𑒥𑒱𑒮𑓂𑒏𑒳𑒙 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒑𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒂𑒋𑒪। 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒠𑒪𑒰𑒢𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒰। 𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙 𑒪𑓄 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒂𑒢𑒋 𑒁𑓀𑒑𑒢𑒰 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒙𑒹𑒥𑒳𑒪𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙 𑒅𑒚𑒰 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂 𑒑𑒼𑒣𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒠𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒋, 𑒏𑒢𑒹𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒲𑒥 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒋।”

𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒂 𑒋𑒏 𑒖𑒑 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒙𑒹𑒥𑒳𑒪𑒣𑒩 𑒩𑒐𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂 𑒑𑒼𑒣𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒰𑒖𑒴-𑒏𑒱𑒮𑒧𑒱𑒮 𑒐𑒹𑒪𑒻𑒟 𑒞𑒰𑒥𑒹𑒧𑒹 𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒞𑒲𑒢 𑒏𑒣 𑒏𑒺𑒤𑒲 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒺𑒤𑒲 𑒣𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒠𑒮𑒹-𑒣𑒢𑒩𑒯 𑒧𑒱𑒢𑒙𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒤𑒪𑒏 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙 𑒂𑒋𑒪 𑒖𑒃𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒥, 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒼𑒪𑒰, 𑒁𑒢𑒰𑒩𑒏 𑒠𑒰𑒢𑒰, 𑒁𑓀𑒑𑒴𑒩 𑒂 𑒣𑒿𑒔-𑒣𑒿𑒔 𑒕𑒲𑒧𑒲 𑒧𑒰𑒪𑒦𑒼𑒑 𑒏𑒹𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒋। 𑒤𑒪𑒰𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃 𑒂 𑒢𑒧𑒏𑒲𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪। 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙 𑒠𑒹𑒐 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒤𑒪𑒹𑒮𑒿 𑒞𑒿 𑒣𑒹𑒙 𑒦𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒂𑒥 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃 𑒏𑒼𑒢 𑒣𑒹𑒙𑒧𑒹 𑒐𑒰𑒋𑒥।”

𑒞𑒻𑒣𑒩 𑒢𑒴𑒢𑒴 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒁𑒯𑒴𑒿 𑒯𑒠 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲, 𑒤𑒪𑒹𑒮𑒿 𑒏𑒹𑒞𑒾 𑒣𑒹𑒙 𑒦𑒩𑒪𑒻 𑒯𑒹𑒿। 𑒪𑒰𑒥𑒯 𑒯𑒾 𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞, 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃 𑒂 𑒢𑒧𑒏𑒲𑒢𑒥𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙 𑒠𑒳𑒯𑒳𑒢 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹।”

𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞 𑒢𑒴𑒢𑒴𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂 𑒑𑒼𑒣𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒰𑓀 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃 𑒂 𑒢𑒧𑒏𑒲𑒢𑒥𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒙 𑒩𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒧𑒱𑒚𑒰𑒃𑒧𑒹 𑒁𑒧𑒴𑒪𑒏 𑒩𑒮𑒧𑒪𑒲, 𑒏𑒰𑒖𑒴𑒏 𑒥𑒩𑓂𑒤𑒲, 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒒𑒲𑒂𑒏 𑒣𑒹𑒛𑓃𑒰, 𑒢𑒰𑒩𑒱𑒨𑒪𑒏 𑒪𑒛𑓂𑒛𑒴 𑒂 𑒢𑒧𑒏𑒲𑒢𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒢𑒹𑒩𑒲 𑒦𑒳𑒖𑒱𑒨𑒰 𑒕𑒪। 𑒢𑒰𑒮𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒕𑒰𑒪𑓂𑒯𑒲 𑒠𑒹𑒪 𑒔𑒰𑒯 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒣𑒲𑒪𑒻𑒢। 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒪𑒰 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒂𑒥 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒰𑒌𑒪 𑒖𑒰𑒋। 𑒏𑒱𑒨𑒻𑒏 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒻𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒣𑒮 𑒑𑒰𑒧𑒼 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱।”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ગૈપન ભાભવાવૂ વળભા-

"કણિક, ઐઠામ ઘન ગૈ છૈ કીળે એોક શ્રૌગુણાર છૌ।"

યુનયુન વાવૂ વળભા-

"સે ગઁ છૈહૈ। ળઁ કુટમૈતી મઽ ળાયેળ ગઁ કેગેકો દનિ નહવા।"

ભાભવાવૂ વળભા-

"ળઁ કુટમૈતી કનઽ યાહવ ગઁ કણિક ને હયેણ।"

યુનયુન વાવૂ-

"દસ કોસસઁ ળે એોક હ્યાન મઽ કઽ એવી હેન સે ગઁ કુટમૈતીએ કનએ ભેભ ને, શ્રાકિ શ્રહઁક ગામ દેપ્પણ।"

ઇ ગપ હોશે નહએ કિ વીમ્મા એકટા ણશ્તનીમે પાન, સુપાની, રભાયચી, ળન્દા શ્રા ણુભસી પત્તી ભઽ એવી। શ્રો ણશ્તની ટેવુભપન નપ્પ સિમકેં પયન છુવિ ગોડ઼ ભાગભી। ગોડ઼ ભાગભાક વાદ સવહક શ્રાગઁ પાનક ણશ્તની વઢ઼ૌભી। સમ ગોને પાન-સુપાની રભાયચી પ્પાર ગેભા। વીમ્માકેં એકટા કુન્સીપન વૈસૌભ ગેભ। યુનયુન વાવૂ શ્રપન મત્તિન ગોપી વાવૂ દસિ ણકભા। ગોપી વાવૂ યુનયુન વાવૂક રશાના સમૈદ્ ગેભા।

ગોપી વાવૂ વીમ્માસઁ પુછભપ્પનિ-

"વુય્યી શ્રહઁ કી સંળ્મા છૌ?"

વીમ્મા વળભી-

"વીમ્મા।"

ગોપીવાવૂ-

"વાવૂળીક નાશ્રો?"

વીમ્મા-

"શ્રી ભાભવાવૂ નાયા।"

ગોપી વાવૂ-

"કોન ક્ભાસમે પઢ઼ૈ છૌ?"

વીમ્મા-

"વીએ શ્રળ્મર્નભમે।"

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

गोपी बाबू-

"कोन विषयसँ आनर्स कऽ रहल छी?"

शोभा-

"गृह विज्ञान विषयसँ।"

गोपी बाबू-

युगुल बाबू दिसि ताकए लगला। युगुल बाबू शोभासँ कहलखिन-

"जाउ बुच्ची। अहाँ आँगन जाउ।"

शोभा उठि कऽ आँगन चल गेली। तैबीच युगुल बाबू बजला-

"लड़की हमरा पसन्द अछि। लड़की देखबा, सुनबामे सुन्दर आ सुशील अछि।"

तैपर गोपी बाबू बजला-

"एकरा के काटत।"

लालबाबू पुछलखिन-

"तखन आगाँ?"

गोपी बाबू बजला-

"देखियौ मंगनौतीवला बीस लाख, एकटा बुलेट मोटर साइकिल आ पाँच भरि सोन दऽ ले तैयार छला। मुदा लड़कीक आँखि कुरूप छेलै तँए कुटमैती नै भेल।"

युगुल बाबू बजला-

"ओ बबिककेँ इंजीनियर बनेबामे हमरा बारह लाख टका खर्च भेल अछि। अखन ओ रेलवेमे इंजीनियर अछि आ आइएसक तैयारी सेहो कऽ रहल अछि। पहिलुकाबला पचीस लाख टाका नगद, एकटा अपाची गाड़ी आ सात भरि सोनाक अलाबे फ्रिज, कूलर, गोदरेज, वासिंग मशीन, टीबी सभ दऽ ले तैयार छला मुदा लड़कीक कद छोट छेलै। तँए हमरा लड़की पसिन नै भेल।"

गोपी बाबू आ युगुल बाबूक बात सुनि लालबाबू सोचमे पड़ि गेला। ओ सोचए लगला जे ई सभ कहै छथिन तइ हिसाबे तँ कमतीमे तीस लाख टकासँ ऊपरे खर्च हएत, मुदा अपना तँ दसो लाखक सकरता नइ अछि।

लालबाबूकेँ चुप देख गोपी बाबू बजला-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

“आब अहूँ त' कहि चलियौ। एना चुप रहलासँ काज चलत?”

तैपर लालबाबू बजला-

“यौ मास्टर साहेब, झुनझुन बाबूकेँ बुझल छैन जे हम साधारण किसान छी। चटिया सभकेँ टीशन सेहो पढ़बैत छी। बेसी हमर एकटा छोट-क्षीण दवाइ दोकान चलबैत अछि। हमरा त' दसो लाख सकरता नै अछि तँए चुप छी।”

झुनझुन बाबू बजला-

“तखन कुटमैती केना हएत। जँ इंजीनियर लड़कासँ बेटीक बियाह करबै तहूमे सरकारी जॉबबला, त' तीस लाखसँ ऊपरे खर्च करए पड़त।”

लालबाबू बजला-

“यौ सरकार, हम दस लाखसँ बेसी खर्च करबामे अक्षम छी। अपने लोकैन जे हमरा दरबज्जापर एलौं तइले अपने लोकैनकेँ धैनवाद।”

झुनझुन बाबू बजला-

“हम तीन दिनक समय दइ छी, फोन नम्बर लऽ लिअ। अपन सभ परिवार बिचारि लिअ। जँ अपनो बिचार भऽ जाएत तखन हमरा फोन कऽ देब। अहाँक कन्या सुन्नैर आ सुशल अछि तँए तीन दिन समय दऽ रहल छी, नहि त' हमरा बेटापर बरतुहारक लाइन लागल अछि।”

फोन नम्बर लिखिबए लगलखिन, लालबाबू अनमनस्क भावसँ फोन नम्बर लिखि लेल।

बरतुहार सभ गेला। लालबाबू उदास भऽ गेला। ओ खेनाइयो ने खेलैन। अगिला दिन भोरमे लालबाबूक बेटाक संगी विनय आएल। विनय निर्मली बजारमे मोबाइल रिपेयरिंगक दोकान खोलने अछि।

लालबाबूक मुँहक उदासी देख विनय पुछलकैन-

“काका, मोन बड़ खसल देखै छी। की बात छिऐ। काल्हि जे रीमा बहिनकेँ देखए बरतुहार सभ आएल छला से की भेल।”

लालबाबू सभ बात जे पैछला दिन झुनझुन बाबूक संगे भेल रहैन, विनयकेँ कहलखिन।

तैपर विनय बाजल-

“अँइ यौ काका, ओइ बरतुहार सभकेँ ई नै बुझल छैन जे दहेज लेब-देब कानूनी अपराध छी। अखुनका जे नीतीशजीक सरकार अछि ओ त' ऐ कानूनकेँ कड़ाइसँ पालन करबा रहल अछि। देखलिऐ नहि जे बाल-विवाह आ दहेजप्रथाक उन्मूलन हेतु २१ जनवरीकेँ केहेन मानव श्रृंखला बनल छेलइ।”

ભાઉવાવૂ વળભ-

“હૌ વાવૂ, ૬ સત્ર દેખાવટી વાત છી। એકટા વાત કહ્દ ૬ ળે ૩૧ ળનવરીકેં માનવ શ્રૃંખલા વનલ તરસઁ કી દહેળ ઉનાર-દેનાર નૂકિ ગેલ આકિ નૂકિ ળાએત। દેખને છેઉહ્ક કનિ ળે પૈછલા સાલ દાનૂ વન્દીપન્ન કેહેન માનવ શ્રૃંખલા વનલ નહ્ર, તઁએ કી દાનૂ વન્દ ભઽ ગેલ? સરકાર દાનૂ વેચનાર આ પીનારપર પ્રતિવન્ધ લગૌહ્ક મુદા વનવૈવલ વનૈવત અછિ, વેચૈવલ વેચત અછિ આ પીવૈવલ પીવત અછિ હઁ, આવ ને ખુલ્લમ-ખુલ્લા વિક્રીએ હોઇએ આ ને લોક ખુલ્લમ-ખુલ્લા પીવે કરૈએ। ચોરા-નુકા કઽ વિક્રી હોઇએ આ ચોરા-નુકા કઽ લોક પીવૈએ।”

વ્રનિયા વાળભ-

“પેપરમે તૈ દેખૈ છિએ કેતેક પીનહિાર આ વેચનહિાર ળેલ ળાઇત અછિ। તેનાહયિ દહેળો ઉનહિાર આ દેનહિાર ળેલ ળાએત।”

ભાઉવાવૂ વળભ-

“હૌ કહ્ઁ કોનો દહેળ ઉવએ-વલા ળેલ ગેલ હેત। ટુનટુન વાવૂક વેટાક વિઆહમે એકટા સ્કાર્પિઓ ગાડ઼ી, દસ લાખ ટકા નગદ, શ્રૃંગાર, ગોદરેળક અલાવે કનિયાંક સત્ર ળેવર લડ઼િકિવલા દેલકૈન, કહ્ઁ કછિઓ ભેલૈ।”

વ્રનિયા વાળભ-

“યૌ કાકા, ળખન કહિયો પ્રશાસન ઓતએ શકિાયત કરત તખન ને કોનો કાર્રવાઈ હએત, નહિ તઁ કી હએત?”

ભાઉવાવૂ વળભ-

“પ્રશાસન ઓતએ ળે લોક શકિાયત કરત તરૌ પુખ્તા સવૂતક ળરૂરત હેતૈ, તરમે શકિાયત કેનહિારકેં વેસી ઝમેલાની છૈ। લોક વેટીક વિઆહ કરત આકિ કેશ-ફૌદારી લડ઼ત। કેહેન ભ્રષ્ટ શાસન વેવસ્થા અછિ સે નહિ દેખૈ છહ્ક। એકટા ગપ આઓર કહૈ છિઆ। હમરા મામા ગામમે એકટા પંચાયત સેવક અપના વેટીક વિઆહ કેને નહએ, તેહેન ભવ્ય પાણ્ડાલ લગૌને નહએ ળે આન-આન ગામક લોક પાણ્ડાલ દેખ આએલ છેલૈ। વી઼ડીઓ, સીઓ, એસ઼ઓ, દરોગા આઓર કેતેક ને કેતેક હાકમિ સત્ર સેહો વિઆહમે આએલ નહૈથ। ખૂવ દાનૂ આ મૂર્ગાક માસુ ચલલ। સુનૈ છિએ ઓ ગ્રામ સેવક ચારિટા પંચાયતક પંચાયતી સચવિક પ્રભારમે અછિ।”

વ્રનિયા વાળભ-

“સે તઁ ઠીકે કહૈ છિએ કાકા। મુદા વેટિયોવલાકેં તઁ કછિ ઝમેલાની ઉઠવએ પડ઼તૈ તખને ને કોનો રસ્તા નિકલૈ। અચ્છા ૬ કહ્ર, મૌઆહિસઁ ળે વરતુહાર આએલ છલા, હુનકા સત્રકેં લડ઼કી પસનિ ભઽ ગેલ છેલૈન મુદા દહેળક ચલતે કુટમૈતી તૈ ભઽ નહલ અછિ। સએહ ને?”

ભાઉવાવૂ વળભ-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

“𑒯𑒿, 𑒮𑒋𑒯 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱।”

𑒫𑒱𑒢𑒨 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻𑒢-

“𑒁𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒄 𑒏𑒯𑒴 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒾𑒂𑒯𑒱 𑒫𑒲𑒧𑒰 𑒥𑒯𑒢𑒱𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒏𑒩𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒲?”

𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒏𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒁𑒦𑒰𑒑𑒪 𑒯𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒩𑒹𑒪𑒫𑒹 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒋 𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒞, 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒣 𑒛𑒱𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒾𑒪𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩।”

𑒞𑒻𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒢𑒨 𑒥𑒰𑒖𑒪-

“𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒩𑒴। 𑒫𑒲𑒧𑒰 𑒥𑒯𑒢𑒱𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒍𑒯𑒱 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒹𑒞𑒻। 𑒯𑒧 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒴।”

𑒄 𑒏𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒢𑒨 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒕𑒱 𑒮𑒧𑒗𑒰𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒛𑓃 𑒏𑒧 𑒖𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒻 𑒮𑒳𑒢𑒋।

𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒧𑒾𑒂𑒯𑒱𑒥𑒪𑒰 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒤𑒼𑒢 𑒣𑒩 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢-

“𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒞𑓁 𑒂𑒚 𑒥𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒂 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒂𑒩 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒏 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒋 𑒧𑒾𑒂𑒯𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।”

𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒂𑒅। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒹𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒞𑒲𑒮 𑒪𑒰𑒐𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩𑒹𑒏 𑒩𑒰𑒐𑒥।”

𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒁𑒔𑓂𑒕𑒰-𑒁𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒃।”

𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒢 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂 𑒫𑒱𑒢𑒨 𑒧𑒼𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪𑒮𑒿 𑒚𑒲𑒏 𑒮𑒥𑒰 𑒂𑒚 𑒥𑒖𑒹 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒞𑒹 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒔𑒰𑒯-𑒢𑒰𑒮𑓂𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒑𑒼𑒣𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒩𑒯𑒻𑒟। 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒫𑒱𑒢𑒨𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢-

“𑒄 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒕𑒻𑒟। 𑒨𑒋𑒯 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒨𑒼𑒑𑓂𑒨 𑒂 𑒃𑓀𑒣𑓂𑒪𑒰𑒨𑒙 𑒕𑒻𑒟, 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒥𑒹𑒮𑒱𑒨𑒼 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒋 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒏𑒳𑒙𑒧𑒻𑒞𑒲 𑒏𑓄 𑒪𑒱𑒁।”

𑒞𑒻𑒣𑒩 𑒑𑒼𑒣𑒲𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒚𑒲𑒏𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢। 𑒨𑒾 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒖𑒽𑒥𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒥 𑒥𑒛𑓃 𑒧𑒼𑒬𑓂𑒏𑒱𑒪 𑒕𑒃। 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒩𑒹𑒪𑒫𑒹𑒧𑒹 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩।”

𑒫𑒱𑒢𑒨 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂 𑒑𑒼𑒣𑒲𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒟 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒂 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢-

“𑒠𑒯𑒹𑒖𑒣𑒩 𑒐𑒳𑒪𑒹𑒂𑒧 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒢𑒰𑒃 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱, 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒩𑒰𑒣 𑒕𑒃। 𑒞𑒴𑒿𑒋 𑒠𑒪𑒰𑒢𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒩𑒱𑒨𑒼 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒧𑒹 𑒑𑒣 𑒯𑒹𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲।”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

યુનયુન વાવૂ વળઊ-

"ઠીક છશ। યઊ દઊાનક મીનો। મીનોમે યાનયિ ગોમે ગપ કનવા।"

વ઼નિય઼ વાળઊ-

"હમ કનેક ઊઘુશંકા કેને શ્રવૈ છી નાવેન શ્રપને સબ દઊાનક મીનન વૈસ કઽ ગપ-સપ્પ કનૂ।"

યુનયુનવાવૂ દઊાનક પાછ◌ાँ શૌયાઊય઼ દેખ્વૈન કહઊખ્નિ-

"શ્રોહિ ઊટનીનમે યઊ ળાઉ।"

વ઼નિય઼ શૌયાઊય઼મે ળા મોવાઇઊમે ટપનેકન્ડ ઑન કઽ સન્ટક ઉપનકા ળેવીમે નખ્ખિ ઊઊક શ્રા પેશાવ કઽ દઊાનક મીનન શ્રાવિ ગેઊ। વ઼નિય઼કેઁ શ્રવનિ ઊાઊવાવૂ વળઊ-

"શ્રાવહ, નોહ્ને દુશ્રાને ગપ-સપ્પ વન્ન છઊ।"

વ઼નિય઼ કુન્સીપન વૈસૈન યુનયુન વાવૂકેઁ પુછઊકૈન-

"શ્રપનેકેઁ ઊડ઼કી પસીન શ્રછિ કિનિ?"

નૈપન યુનયુન વાવૂ વળઊ-

"હમના સોઊહશ્રનાસઁ વન્નીસશ્રના ઊડ઼કી પસનિ શ્રછિ।"

ગોપીવાવૂ વળઊ-

"એહેન સુન્નૈન શ્રા સુશીઊ કન્ય઼ા પસનિ નૈ હેનૈ નઁ કેહેન પસનિ હેનૈ।"

વ઼નિય઼ પુછઊકૈન-

"ળખ્ન ઊડ઼કી પસનિ શ્રછિ નખ્ન શ્રાગ◌ाँક વેવ઼સ્થા વાન કી હેનઇ?"

યુનયુન વાવૂ વળઊ-

"હમ નઁ શ્રોનપન પનસૂએ ઊાઊવાવૂકેઁ કહિ દેને નહિન ળે કમનીમે નીસ ઊાખસઁ ઊપને ખન્ય હએ।"

વ઼નિય઼ પુછઊકૈન-

"નીસ ઊાખમે કેના કી, સે કની શ્રનછિ ઊશ્રિ।"

યુનયુનવાવૂ-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

"देखू, हमर बेटा रेलवेमे इंजीनियर अछि। सरकार तरफसँ ओकरा चारि चक्का गाड़ी भेटल छइ। तँए बीस लाख टका नगद, कनियाँक सभ जेवर, कमतीमे एगारह भरि सोन, एकटा अपाची मोटर साइकिल, स्टेनीयर, सोफा, गोदरेजक आलमीरा, वासिंग मशीन, स्कूटी आ टीभी दियौ आ बरियाती जतबेक कहबै ततबेक आएब।"

लालबाबू बजला-

"अपनेक सभ माँग हमरा मंजूर अछि, मुदा नगदीमे पाँच लाख कम कऽ दियौ।"

चुनचुन बाबू बजला-

"पाँच लाख कि पाँच टका कम नै हएत। यौ ठाढ़ीबला पच्चीस लाख नगद आ एगारह भरि सोनाक अलाबे सभ समान दइक प्रस्ताव लऽ कऽ काल्हि आएल रहैथ, लड़कियो ए-वन छै, मुदा हम अपनेकेँ कहि देने रही तँए ठाढ़ीबलासँ गप्पो ने केलौं।"

विनय कहलकैन-

"ठीक छै, अपने लड़काकेँ बजा लियौन, औझका आठम् दिन हम सभ लड़काकेँ छेकदान करब।"

गोपीबाबू पुछलकैन-

"आठम दिन कोन दिन पड़ै छइ।"

चुनचुन बाबू बजला-

"आठम दिन नअ तारीख आ सोम दिन पड़ै छइ। ठीक छै, हम रबिये दिन लड़काकेँ मंगा लेब। अहाँ सोमकेँ छेकदान कऽ लेब। छेकदानमे आएब केतेक गोरे?"

तैपर लालबाबू बजला-

"यौ कुटुम नारायण, हम एहवासँ पैर उठाएब नीक नै बुझै छी। तँए पाँचे गोरे आएब। अहूँ बेसी लाम-काफमे नै जाएब। हम सभ सबेरे नअ बजे तक आएब आ पाँच बजे बेरमे चल जाएब।"

गोपीबाबू बजला-

"एकदमउत्तम बात कहलिऐ।"

तैपर लालबाबू बजला-

"जखन सभ बात भइये गेल तखन हमरा सभकेँ विदा करू। बहुत इन्तजाम-बात करए पड़त।"

गोपीबाबू कहलखिन-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"सेतँ ठीके। बेटीबलाकेँ बड़ झंझट करए पड़ैत छइ। यएह कुटमैती नीक भेल। बेटी रानी बनि कऽ रहत।"

चुनचुन बाबू बजला-

"अच्छा खाना खा कऽ चारि बजे चल जाएब।"

तैपर बनिया कहलकैन-

"नहि, हमरा सबकेँ किछि जलखै करा दिअ, हम सब चलि जाएब।"

सएह भेल। जलखै खा दुनू गोटे चानी बनिया आ लालबाबू बिदा भऽ गेल।

आइ नअ मार्च छी। चुनचुन बाबूक दरबज्जापर डीजे बाजा मधुर स्वरमे बजि रहल अछि। दरबज्जापर चुनचुन बाबू, गोपीबाबू आ चारि-पाँच गोटे आर छथि। कुटुम सबकेँ खाइ बास्ते दस किलो रहु माछक बेबस्थाक अलावे सुधा दुधक रसगुल्लाक ओर्डर सेहो कएल गेल अछि। आँगनमे गीतहारि सब एकाएकी पहुँच रहलि हेन।

समय नअसँ साढ़े नअ बजल। घड़ी दिसि ताकि चुनचुन बाबू बजला-

"नअए बजेक समय लालबाबू देने रहैथ, साढ़े नअ बजि रहल अछि मुदा कोनो पता नहि छैन। अखन धरि तँ हुनका सबकेँ पहुँच जेबक चाहिऐन!"

तैपर गोपी बाबू बजला-

"एक-आध घन्टाक कोनो बात नहि, सब कियो अबिते हेता।"

गप-सप्प चलिते छल कि बाबूबरही थानाक बोलेरो गाड़ी आबि कऽ चुनचुन बाबूक दरबज्जापर रुकल। गाड़ीसँ थाना प्रभारी आ पुलिस सब उतरिते छल कि एकटा स्कार्पियो गाड़ी आबि कऽ सेहो ठाढ़ भेल। ओइ गाड़ीमे लिखल रहए डीएसपी- मधुबनी। गाड़ीसँ डीएसपी साहैब उतरला, हुनका पाछाँ चारि-पाँचटा चितकबरा ड्रेस पहिरने सशस्त्र पुलिस सेहो उतरल।

चुनचुन बाबू आ गोपी बाबूकेँ किछु समझमे नहि एलैन। डीएसपी साहैब दलानमे आबि कऽ पुछलखिन-

"चुनचुनजीकौन है?"

चुनचुन बाबू हाथ जोड़ैत बजला-

"सर, हमही छी चुनचुन राय। की सेवा करल जाए?"

डीएसपी साहैब कहलखिन-

"आपको दहेज मांगने के अपराधमे गिरिफ्तार किया जाता है।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

आब त' झुनझुन बाबूकेँ काटू त' खून नहि। गोपी बाबू भागैत रस्ता खोजए लगला। डी.एस.पी. साहेब पुछलखिन-

"गोपीजी कौन है?"

गोपी बाबू हाथ जोड़ैत कहलखिन-

"सर, हम छी गोपी।"

डी.एस.पी. साहेब कहलखिन-

"आपको भी गिरफ्तार किया जाता है।"

डी.एस.पी. साहेब थाना प्रभारीकेँ कहलखिन-

"बड़ाबाबू, इन दोनो आदमीकेँ गिरफ्तार कर गाड़ीमे बैठाइये।"

थाना प्रभारी पुलिसकेँ आदेश देलखिन-

"इन दोनो आदमी को हथकड़ी पहनाकर गाड़ीमे बैठाओ।"

पुलिस गाड़ी देख अँगनामे लाबा-फरही छुटऽ लागल। विविको अँगनासँ निकैल दरबज्जापर पहुँच गेल छल। थाना प्रभारी बाबूवरहीक बात सुनि विविक बजल-

"सर, हमर नाओं विविक छी। हम झुनझुन बाबूक बेटा छी। गोपी बाबू हमरा पिताजीक मित्र छथिन। सर, कोन अपराधमे हमरा पिताजी आ गोपीबाबूकेँ एरेस्ट केलिऐन हेन?"

तैपर डी.एस.पी. साहेब बजला-

"आपका पिताजी आपकी शादी के लिए लड़कीवलासँ बीस लाख रूपैआ नगद आओर दस लाख का सोना तथा अन्य समान दहेजमे मांगे है। लड़कीवला मुख्यमंत्रीकेँ यह आवेदन दिए है। मुख्यमंत्री कार्यालय से एस.पी. मधुबनी को एफ.आइ.आर. दर्ज कर कठोरतम कार्रवाई करने के लिए वाइरलेस से आदेश दिया गया है।"

तैपर झुनझुन बाबू बजला-

"नै सर, हम दहेज नै मांगलियैन हेन। लड़कीवला झूठ-मूठक इलजाम हमरापर लगौलक हेन।"

डी.एस.पी. साहेब बैगसँ एकटा टेपरेकर्ड निकालि चालू केलखिन। झुनझुन बाबू, गोपी बाबू, लालबाबू आ विनियक बीच जे गप-सप्प भेल रहए सभ सुनाए लागल। जखन सभ बात सुनाएल भऽ गेल तखन डी.एस.पी. साहेब बजला-

"कहिये झुनझुनजी, अब क्या कहते है! झूठ क्यो बोल रहे थे?"

યુનયુન વાવૂક વોઉતી વન્ન ૪ઽ ગેઉેન, ગોપીવાવૂક યેહ્ના દસિ દેખ્લૈત યુનયુન વાવૂક સમુય્યા દેહ ઘામસઁ નહા ૧હઉ છેઉેન। ગોપીવાવૂક મનમે વે૧-વે૧ ઉઠૈત ૧હૈન- કેક૧ ખેતી કેક૧ ગાએ, કોન પાપી ૧ોમએ ળાએ। નાહઁકમે શ્ઁસ ગેઉૈ। શ્રાવ ળેઉ ગેને વનિા કોનો ઉપાય નૈ શ્રછ। વ઼વિ઼ક સોચએ ળઁ પતિાળી ળેઉ ચઉ ળેતા ૧ઁ સજ પ્૧તષ્ઠિા માટમિ મઉિ ળાએત। ળખ્ને ઉેક સજ વુહ્ત ક કુટયિૈઉ શુ૧ૂ ક૧ત। ૧ેઉવેમે નૌક૧ી ક૧ૈ છી। કે કહઉક નૌક૧યિોપ૧ ને પડ઼ ળાએ વશ્રિાહો ક૧ૈમે દકિ્કતે હએત।

શ્ઁગનામે વ઼વિ઼કક માએ ળખ્ન વુહ્ઉેન ૧ઁ શ્રો કાનએ ઉગઉ। વ઼વિ઼કકેઁ કછુિ શુ૧ેવે ને ક૧૨। ઑગનમે મા૨ક કાનવ સુનઉક ૧ઁ ઑગન ગેઉ। માએકેઁ સમહૌઉક। માએસઁ કહઉક તો ળુનિ કાન। હમ ડ઼ીએસ઼પી સાહેવસઁ નહિ઼ા ક૧એ ળા૨ છઈન। ૧ૂ શ્રસથનિસઁ વૈસ।

વ઼વિ઼ક દ૧વળ્ળાપ૧ શ્રાએઉ ૧ઁ દેખ્ઉક યુનયુન વાવૂ શ્રા ગોપીવાવૂકેઁ ગાડ઼ીમે વૈસઉ છેઉ। ડ઼ીએસ઼પી સાહેવ દ૧ોગાસઁ કહૈત ૧હથનિ-

"વડ઼ાવાવૂ, ચઉપિ઼થાનાપ૧ ચઉ઼િ।"

વ઼વિ઼ક ડ઼ીએસ઼પી઼ક શ્રાગાઁ હાથ ળોડ઼ ઠાઢ઼ ૪ઽ ગેઉ શ્રા વાળઉ-

"સ૧, હમ૧ા વાવૂળી શ્રા ગોપીવાવૂકેઁ છોડ઼ દેઉ ળાએ। હમ વનિા દહેળકેઁ વશ્રિાહ ક૧ૈઉ તૈયા૧ છી।"

વ઼વિ઼કક વ઼નિમ્૧તાપૂ૧્વક નવિ઼દેન સુનિ ડ઼ીએસ઼પી઼ સાહેવ વળઉ-

"ઠીક હૈ। શ્રાપ શ્રપને પતિાળીકેઁ સાથ ગાડ઼ીમે વૈઠક૧ મધુવની કો૧્ટ ચઉપિ઼। મૈ ઉડ઼કીવઉ કો ભી ઉડ઼કી ઉેક૧ મધુવની કો૧્ટ શ્રાને કે ઉએ કહતા હૂઁ। વ઼હાઁ શ્રાપ કી શાદી કો૧્ટ મે ઉાઉવાવૂ ૧ાય઼ કી વેટી સે હોગી। શાદી કે વાદ ૨નઉોગો કે વ઼ષિય઼ મે સોચા ળાએગા।"

એક ઘન્ટાક વાદ ઉાઉવાવૂ, ઉાઉવાવૂક પત્ની, વ઼નિય઼ શ્રા ઉાઉવાવૂક વેટી વ઼ીમા એકટા વોઉેનો ગાડ઼ીમે વૈસ કઽ મધુવની કો૧્ટ પહુઁચઉ। કો૧્ટમે વ઼ીમા શ્રા વ઼વિ઼કક વશ્રિાહ ભેઉ। વશ્રિાહક વાદ વ઼ીમા ડ઼ીએસ઼પી઼ સાહેવસઁ કહઉકૈન-

"સ૧, હનિકા દુનૂ ગોનેકેઁ માસ્ક કઽ દયિ઼ૌન।"

ઉાઉવાવૂ સેહો કહઉખ્નિ-

"હઁસ૧, યુનયુન વાવૂ શ્રા ગોપી વાવૂકેઁ માસ્ક કઽ દયિ઼ૌન। હમ૧ા હમ૧ા વેટીક વશ્રિાહ વનિા દહેળક ૪ઽ ગેઉ।"

તૈપ૧ ડ઼ીએસ઼પી઼ સાહેવ વળઉ-

"ઠીક હૈ, પહઉે શ્રાપ ળો કાનૂની કા૧્૧વા૨ ક૧ને કા શ્રાવ઼ેદન દયિ઼ે હૈ ઉસકે સમ્વન્ધ મે એક શ્રાવ઼ેદન મામઉા શ્રાપસ ઉેને કાઽ દીળયિ઼ે, શ્ફ઼િ ૨ન દોનો વ઼્ય઼ક્તયિ઼ો કે વ઼ષિય઼ મે સોચા ળાએગા।"

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

सलह भेल। माने लालबाबू मामला आपस भऽ गेल। डीएसपी साहेब युनयुन बाबू आ गोपी बाबूसँ एकटा सपथ पत्र लिखौलनि जइमे भविसमे फेर एहेन गलती नै करब तइ बातक जिकिर रहए। डीएसपी साहेब युनयुन बाबू आ गोपी बाबूसँ कहलखिन-

“आप लोग कान पकड़कर पाँच बार बोलिये- दहेज पाप है।”

युनयुन बाबू आ गोपी बाबू दुनू गोरे कान अपन-अपन कान पकैड़ बाजए लगला-

“दहेज पाप छी। दहेज पाप छी।”

८

शब्द संख्या : २८२२

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

नारायण यादव- दू टा लघुकथा

पंचैती

रामपुरमे एकटा जमीदार छलाह। पैघ जमीदारी, नौकर-चाकर, खेती-पथारीक अम्बार लागल छल। हुनका तीन गोट बेटा छल। बहुत दिन धरि परिवारक भरण-पोषण करैत वृद्धावस्थाकेँ प्राप्त कएलन्हि। बुढ़ाड़ी अवस्थामे नाना प्रकारक बीमारी तंग करए लगैत अछि। जमीदार चातक बीमारीक इलाज करैत रहलाह। ओहि इलाजमे बहुतरास जमीन-जथा सेहो बिकि गेलैन्हि। ठीक नहि भेलाह। स्वर्गवासी होइसँ पहिनहि गामक चारि-पाँच प्रतिष्ठित व्यक्तिकेँ बजाए कहलनि-

“हमरा सम्पतिकेँ दू भागमे बाँटि देबैक।”

श्राद्ध कर्म समाप्त भेल। गामक प्रतिष्ठित लोकनि सभ जमा भेलाह। बँटवारासँ पहिनहि बुढ़ाक कहल बात पर मंथन होमए लागल। बेटा छन्हि तीन आ बँटवारा होएत दू भागमे। सभ सोचए लगलाह। बुढ़ा मृत आत्माकेँ ठेस नहि लगबाक चाही। बुढ़ाक बातक पालन होएबाक चाही। गणमान्य व्यक्तिकेँ किछु सुझा नहि रहल छलन्हि। सभ कियो एहि तारतम्यमे लागल रहलाह, जे एहि बातक निराकरण केना होइ। गणमान्यमे सँ एक व्यक्ति बजलाह-

“नगरमे राम लखन बाबू बड़ पैघ पंचैतिया छथि। एहि विषय पर हुनकेसँ राय विचार कए ली।”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

थाकू-पाकू ग्रामसामान्य व्यक्ति राम श्याम बाबूसँ राय विचारक लेल नगर पहुँचलाह। कनिको हुनकर घर देखल नहि छल। राम श्याम बाबूक घरक बगलमे एकटा इनार छल। ओहि इनार पर एकटा नव युवती पानि भरि रहल छलीह। युवतीक उम्र तकरीबन १७-१८ वर्ष छैक। ग्रामसामान्य व्यक्तिमेसँ एक व्यक्ति ओहि पानि भरैत नव युवतीसँ पुछलथिन्ह-

“दाइ, राम श्याम बाबूक घर कोन छैक।”

ओ युवती जवाब देलन्हि-

“जनिकर अहाँ नाम लैत छी ओ तँ मरि गेलाह।”

सभ कियो उदास भय गेलाह। तावत् एकटा प्रौढ़ा इनारक नजदीक पहुँचलीह। ओ ग्रामसामान्य व्यक्ति सभकेँ देखि पुछलन्हि-

“अहाँ सभ की खोजैत छी?”

ग्रामसामान्य व्यक्तिमे सँ एक व्यक्ति कहलैन-

“राम श्याम बाबूक घर खोजैत छी।”

प्रौढ़ा हाथसँ इशारा करैत घर देखबैत बजलीह-

“ओ तँ आन्हर भय गेलाह।”

ग्रामसामान्य व्यक्ति सभ आँगा बढ़लाह। कनेक दूर पर एकटा दरबाजा छल। ओतय राम श्याम बाबू बैसल छलाह। ग्रामसामान्य व्यक्ति लोकनि राम श्याम बाबूकेँ नमस्कार कय दरबाजापर राखल कुर्सी आ चौकी पर बैस रहलाह। हुनका लोकनिक मनमे नवयुवती आ प्रौढ़ाक जवाब पहेली बनल छल। हैरत छलन्हि जे राम श्याम बाबू जखन जीवित छथि तँ ओ नवयुवती कियैक बजलीह जे राम श्याम बाबू एहि संसारमे नहि छैथ। प्रौढ़ा कियैक कहलीह जे राम श्याम बाबू आन्हर छैथ।

ग्रामसामान्य व्यक्ति लोकनिकेँ एहि प्रश्नक जवाब हेतु जिज्ञासा बढ़ि गेलैन्ह। कुशल-क्षेम परिचय-पात भेलाक बाद राम श्याम बाबू हुनका लोकनिक स्वागत-सत्कारमे लागि गेलाह। नेना सभक सहयोगसँ पानि आ चाहक इन्तजाम आंगनमे भेज देलन्हि।

राम श्याम बाबू बजलाह-

“अहाँ लोकनि कोन प्रयोजनार्थ एतय अयलहुँ?”

ग्रामसामान्य व्यक्तिमे सँ एकटा बजलाह-

“सरकार हमरा लोकनिक समस्या बादमे कहब। ताहिसँ पहिनहि एकटा दोसर प्रश्न सामने आबि गेल। पहिने एकर समाधान करू।”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

राम लषण बाबू बजलाह-

“बाबू कोन तरहक समस्या अछि?”

गणमान्य व्यक्ति बजलाह-

“एकटा बच्चिया इनार पर पानि भरैत छलीह। हुनकासँ अपनेक बारेमे पुछलयैन्ह। नवयुवती कहलैन- ओ तँ मरि गेलाह। एहि बातक कोनो अर्थ नहि लागल।”

राम लषण बाबू बजलाह-

“ओ बच्चिया तँ ठीके ने कहलक। ओहि बच्चियाक हम बाप छिऐक। ओ बियाहक योग्य भय चुकल छथि। हम ओकर बियाह नहि करा रहल छियैक तँ ओकरा लल तँ हम मरिये ने गेलियै। ओ ठीके ने कहलक।”

पुनः गणमान्य व्यक्ति बजलाह-

“एकटा प्रौढ़ासँ पुछलयैन्ह तँ ओ बजलीह जे ओ आन्हर भय गेलाह तकर की रहस्य छैक?”

राम लषण बाबू बजलाह-

“ओ प्रौढ़ा हमर पत्नी थिकीह। ओ साज श्रृंगारसँ तर रहैत छथि आ ओकरा दिशि ताकितो नहि छियैक, ओकर अभिलाषाक पूर्ति नहि होइत छैक। तँ ओकरा लल तँ हम आन्हरे ने छियैक। आब अहाँ सभक मूल समस्या की अछि से बाबू।”

तावत् आँगनसँ स्वागतक हेतु पानि आ चाह आबि गेल। सभ गणमान्य व्यक्ति पानि चाह पीब बजलाह।

हमरा गाँवमे कपिल बाबूकेँ तीन गोट बालक छन्हि। ओ जखन स्वर्गवासी होमय लगलाह तखन हमरा लोकनिकेँ बजा कहने छलाह जे हमर सम्पति के दू भागमे बाँटि देबैक। हमरा लोकनिकेँ कपिल बाबूक बातक अर्थ नहि लागल। बेटा तीन आ बँटबारा दू जगह। ऐह समस्या लय हम सभ अपनेक शरणमे आयल छी। कोना दू भागमे बाँटी, से बुझाउ।

राम लषण बाबू बजलाह-

“एकर तँ सोझ हिसाब अछि। तीनू बेटामे सँ एकटा कपिल बाबूक बेटा नहि अछि। तेँ ओ कहि गेलाह जे हमर सम्पतिक बँटबारा दू भागमे करब। आब कोन बेटा कपिल बाबूक नहि छन्हि। ओकर पता लगेबाक उपाय बता दैत छी। एकटा कपिल बाबूक फोटो लय लेब आ ओहि फोटोकेँ एकटा कोनो घरमे कुर्सी या टेबुल पर राखि देबैक। तीनू भाइकेँ कोनो एकान्त जगहमे बैसा देबैक। बेरा बेरी कपिल बाबूक फोटो लग भेजब आ ओहि बेटाकेँ कहबैक जे एहि फोटोकेँ १० जूता मारब ओकरा हिस्सा भेटत। जे बेटा बापक फोटोकेँ जूता नहि मारय ओकरा बुझब जे ओ कपिल बाबूक बेटा अछि। आ जे फोटो पर जूता मारत ओकरा बुझब जे ओ कपिल बाबूक बेटा नहि अछि। मुदा ई भेद दोसरकेँ नहि बुझय देब।”

ISSN 2229-547X VIDEHA

ગામમાન્ય વ્યક્તિ સભ ઓતયસઁ ઘર અબૈ ગેલાહ। નામ લષામ બાબૂક કથનાનુસારક પવિબાબૂક સ્ટોટા એકટા ઘરમે નાપ્પલ ગેલ। સભસઁ છોટ બેટાકેઁ ગામમાન્ય પંચ લોકનિ ઘરક અન્દર પ્રવેશ કરૌલન્હિ આ કહલ ગેલ જે બાપક સ્ટોટા પર ફૂતાસઁ મારબ ઓકરા હિસ્સા ભેટત। ઘરક અન્દર છોટકા બેટા પ્રવેશ કયલન્હિ। સ્ટોટાક લગલમે ફૂતા નાપ્પલ છલ। છોટ બેટા બાપક સ્ટોટા પર સૂલ યઢૌલક આ પ્રણામ્ કય કહિ સોચય લાગલાહ। સોચૈત બાજલ જે બાપ હમરા જન્મ દેલૈન્હ, પાલન, પોષણ કયલન્હિ હુનકા હમ ફૂતાસઁ નહિ મારબ। એહેન પાપ હમ નહિ કય સકૈત છી, યાહે હિસ્સા હુએ વા નહિ। બાહર જા નૌકરી યાકરી કય જીવન બિતા લેબ।

બાજૈત ઘરસઁ બાહર ભય ગેલાહ। પંચ લોકનિ છોટકા બેટાકેઁ દોસર કોઠરીમે લય ગેલાહ।

આબ મહિલા બેટાક બારી એલૈક। મહિલા બેટા છોટકા બેટા જકાઁ કયલક ઓહો અપન હિસ્સા લેબસઁ ઇન્કાર કયલક। હિસ્સા હુઅ અથવા નહિ મુદા બાપકેઁ ફૂતા નહિ મારબ।

પંચ લોકનિ મહિલા બેટાકેઁ દોસર કોઠરીમે લય ગેલાહ। આબ જેઠકા બેટાક બારી એલૈક। જેઠકા બેટાકેઁ બુઝૈલ ગેલ જે બાપક સ્ટોટાકેઁ ફૂતાસઁ મારત ઓકરે જમીન-જયદાદમે હિસ્સા ભેટતૈક। જેઠ બેટા કોઠરીમે પ્રવેશ કયલક। સ્ટોટાક લગલમે નાપ્પલ ફૂતા લય તાબર-તોર બાપક સ્ટોટા પર ફૂતા બરસાબય લાગલ।

આબ પંચલોકનિ એહિ નિષ્કર્ષ પર અયલાહ જે જેઠકા બેટા કપલિ દેબ બાબૂક નહિ અછિ। પંચ લોકનિ કપલિ દેબ બાબૂક પત્નીસઁ દરયાપ્ત કેલન્હિ। કપલિ દેબ બાબૂક પત્નીક કથન ઈ ભેલૈન્હ। હમર બિયાહ દોસર મન્દસઁ ભેલ છલ। પહિલુકા ઘરબલા સ્વર્ગ બાસ ભય ગેલાહ। કપલિ બાબૂ અબિવાહિત છલાહ। હમરે ડેરાક નજદીક હુનકો ડેરા છલ। પતિક મુઇલાક બાદ કપલિ બાબૂસઁ હેમ-છેમ બઢ઼િ ગેલ આ બાદમે દુનૂ શાદી કય લેહુઁ। જેઠકા બાલક પૂર્વહિ પક્ષક અછિ।

ઈ બાત હમહિ દુનૂ પ્રાણી જનૈત છલહુઁ દોસર કિયો નહિ। જેઠકો બેટાક જે બાપ છલ હુનકો ઓહિ શહરમે ઢેર રાસ સમ્પત્તિ અછિ।

પંચ લોકનિ આશ્વસ્ત ભય કપલિ બાબૂક સમ્પત્તિકેઁ દૂ ભાગમે બાઁટિ જિવાબદેહીસઁ મુક્ત ભય ગેલાહ। ૮

સ્વાદ પરિવર્તન

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

अवकाश प्राप्त कर्मचारीक जे क्रिया कलाप होइत अछि तहुसँ हमहु वंचित नहि छी। परिवारो छोट-छीन अछि। पेंशनक पैसासँ कहुना दिन काटयि लैत छी। चारि गोट बालक अछि पहिल- डॉक्टर, दोसर- इंजीनियर, तेसर- मास्टर आ चारिम- नेता। पहिल डॉक्टर जे बीमार अछि, दोसर इंजीनियर जे अछि तेसर- मास्टर लचार अछि चारिम जे मैट्रीक फेल आ ओ देशक कर्णधार अछि। प्रायः सभ शहर बाजारक जिनगी जी रहल अछि। दुनू जीव ग्रामीण परिवेशमे नहि रहल छी। किछु खेती-पथारी सेहो अछि। आब तँ खेतो-पथार लोककेँ जानक जंजाल भय गेल अछि। कियो बटाई करक लेल तैयारो नहि होइत अछि। बहुत रास खेतमे पेड़-पौधा लगा देलयिक। बाल-बच्चा ग्रामीण परिवेशमे रहबाक लेल तैयारे नहि अछि। नीक-नीक आमक गाछ, लीचीक गाछ आ कटहरक गाछ रोपि देने छयिक। गाछ सभ पैघ भऽ गेल, आब फरनाई शुरू भेल अछि। गाम घरमे किसानक हालत बड़ खराब स्थिति रहल अछि। कोनो साल रौदी तँ कोनो साल दहारे भय जाइत अछि। धन रोपनीक लेल जन-मजदूर नहि भेटैत अछि। जँ भेटबो करैत छैक तँ उपजासँ बेसी मजदूरयि लय लैत अछि। वर्षा होवाक प्रतिशत बहुत कम भऽ गेल अछि। धानक उपज नहि भेल आ रबीक फसल गेहूँ, चना आ मसूरक उपज नीक भेल अछि। जे बेटा मास्टर अछि हुनक परिवार आ ओकर बाल-बच्चा गाममे रहैत अछि। उपज नहि भेलाक कारण रोटी, सत्तू, दालि खाय पड़ैत अछि। चनाक उपज नीक भेलाक कारण, बेसी खाय पड़ैत अछि। सत्तू खाइत खाइत मन अकछा गेल अछि। सत्तू जखने आँगनमे अबैत अछि तँ देखि मिन कोना दन करय लगैत अछि। करब की कोनहुना खा लैत छी। कहावत छैक जे अपन हारल आ बहुक मारल कियो कतौ थोरे बाजैत अछि। बाल-बच्चा अपन-अपन कमाईमे सँ एक पाई नहि खर्च करत। घरक सभ खर्च नून, तेल, हरदी, मरियाई आ सब्जीसँ लय पोता पोतीक पढ़ाईक खर्च हमरे वहन करय पड़ैत अछि। तँए पैसा नहियि के बराबर बचैत अछि। तैयो कनी कजार दू-चारि किलो चावल खरीद स्वाद परिवर्तन करा लैत छी। सत्तू देखि मन भन्निना जाइत अछि। पत्नीसँ कहलयिन-

“हम काल्हि पटना जायब। पटनामे बौआ आ बौआसीन, पोता-पोतीक आ ओतयसँ राँची बेटी आ नातीनकेँ सेहो भेंट घाँट कय लेब। मनमे तँ छल जे ओतय जायब तँ कमसँ कम सत्तूसँ पिंड छुटत आ स्वाद परिवर्तन सेहो भय जायत। इन्टर सीटी ट्रेनक टिकट कटेलौं। छः बजे जयनगरसँ खुजि
मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, हाँजीपुर, सोनपुर होइत डेढ़-दू बजे पटना पहुँचैत छैक। मनमे बड़ पैघ आशा लेने ट्रेनमे बैसलहुँ। गाड़ीमे भीड़ भार कमे रहैत छैक। खिड़की लग जगह पकड़लहुँ। बाहरक दृष्यक आनन्द लैत आगा बढ़लहुँ। मनमे ई सोचैत छलहुँ जे पटना जायब तँ बेटा पुतोहु नाना प्रकारक फल, दूध, दही, बासमती चावलक भात, अरहरिक दालि, आलू-परोरक तरकारी आ नाना प्रकारक तरूआ खूब खुऔत। पोता-पोतीक लेल मठाई सेहो खरीद लेलौं। मनमे नाना प्रकारक ख्वाब देखैत पटना पहुँचलौं। मने मन सोचैत रही जे डेरा पर जायब तँ पहिने हाथ-पैर धोय चाह

पीअबा किछु रहल सेहो खायबा तकर बाद स्नान कय भात-दालि आ नाना प्रकारक स्वादिष्ट तरुआ, तिलौरी आ पापड़ खाएबा सत्तू खाइत खाइत मन अकछा गेल अछि तेँ स्वाद परिवर्तन भय जायत।

स्टेशन पर उतरि टेम्पू पकड़लहुँ। टेम्पूसँ राजा बाजारक चौक पर उतरलहुँ। डेराक नम्बर पता संगेमे छल। पुछैत-पुछैत डेराक नजदीक पहुँचलहुँ। १०-१५ मिनट प्रतीक्षा कयलहुँ। तखन ऊपरसँ पुत्र-वधु देखलन्हि। तखन बेटा-पोता-पोती नीचा आबि हिनका हाथसँ लय सभ कियो पैर छू प्रणाम कयलक। सभक संगे ऊपर डेरा पर पहुँचलहुँ। पुत्र-वधु आबि पैर छू प्रणाम कयलन्हि। सौभाग्यवती भव: क आशीर्वाद दयलहुँ। तुरत एक गिलास पानि आयल। बाथ रूम जा हाथ-पैर धो पुन: कुर्सीपर आबि बैसलहुँ। फ्रीजसँ एक गिलास स्प्राइट टेबुल पर राखि देलक आ कहलक- "दादाजी, ठंढा पीब लिअ।"

गिलास उठा मुँहमे लगेलहुँ। कोनादन स्वाद लागल। बुझना गेल जे हमरा दारू कियेक पिबैक लेल देलक। आइ धरि एहेन पेय पदार्थसँ दर्शन नहि भेल छल। पोता कहय लागल-

"दादाजी- दादाजी, ठंढा पीजिए अच्छा है।"

हम पोता आ पोतीकेँ स्प्राइट पीआ देलहुँ। गिलास खाली भय गेल। पुतोहु खाली गिलास लय खूब नीमन नहाति एक गिलास सत्तू आगूमे टेबुल पर राखि देलन्हि। सत्तू देखि मनमे भेल जे हम तँ ट्रेनसँ पटना अयलहुँ मुदा ई सत्तु हमरासँ पहिनहि कोना एतय पहुँच गेल। बुझना गेल जे सत्तू हमरासँ पहिनहि शायद हवाई जहाजसँ एतय पहुँच गेल।

किछु देरक बाद मनमे आस लगोने रही जे भोजनमे भात-दालि आ तरकारी भेटत तँ स्वाद परिवर्तन भय जाइत। आधा घंटाक बाद सत्तूसँ भरल लिट्टी, सेवईक खीर, आलू-गोभीक तीमन आगामे टेबुल पर आयल। ओना, भोजन बड़ प्रेमसँ बनल छल। मनहि मन सोचलहुँ जँ जायब नेपाल तँ कपार संगहि जायत। जाहि डरे भागि भेलहुँ सैह पड़ल बखरा। स्वाद परिवर्तनक लेल अयलहुँ पटना मुदा स्वाद परिवर्तन भाग्यमे लिखले नहि छल तखन ने।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

भारतीय मुसलमान आ भारतीयता- मूल हिन्दी लेख- गिरीश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

भारतीय मुसलमानक किछु एहेन खूबी रहल अछि जइ कारणेँ हुनका सभकेँ 'मुसलमान नहि कहि 'भारतीय मुसलमान' कहब बेसी नीक होएत। दुनियाँक कोनो देशक मुसलमान-समाजसँ हिनकर तुलना नहि कएल जा सकैत अछि। भारतक माटि-पानिमे रचल-बसल ऐ समाजक दैनंदिनिक जीवन, आचार-वेवहारक इस्लामसँ दूरोक समन्वय नहि, परन्तु

दक्षिणक तखन होइत अछि जखन इस्लामक केन्द्र सऊदी अरबकेँ ई लोकैन अपन सोचक केन्द्र मानि रहल छैथ आ ओतए-सँ आबि रहल हवाक सुगन्धकेँ महसूस करैक दावी करै छैथ, जखन कि सच्चाइसँ एकर कोनो सरोकार नहि होइत।

जेना कहल गेल अछि, ई अपन रोजमर्राक जिनगी आ व्यवहारमे इस्लामक ऐसी-तैसी करै छैथ, मुदा जँ कियो अन्तिम पोथी- 'कुरान-ए-पाक' आ अन्तिम पैगम्बर 'हजरत मुहम्मद'केँ लऽ कऽ कियो सवाल उठबए तँ मरै-मारैले उताहुल भऽ जाइ छैथ। मजगर बात ई अछि जे ई सभ शासनमे जे करि रहल छैथ, यएह जँ सऊदी अरब मक्का-मदीनामे करैथ तँ या तँ हुनिका सजा-ए-मौत भेटितैन वा बिना कोनो हीला-हवालाक हुनिका ओतएसँ निकालि कऽ बाहर करि देल जैतैन।

ई कहैमे कनिक्को परहेज नहि जे ऐ समाजक लोक निरपवाद रूपमे ओ सभ सभ काज करै छैथजेकर कुरान-ए-पाकमे सख्त मनाही(मुमानियत)कएल गेल अछि, संगे अल्लाह आ हजरत मुहम्मद सेहो जैपर सख्त पाबन्दी लगौने छल।

ऐ मुद्दाकेँ आगू बढ़ेलासँ पहिने हम एकटा छोट-छीन उदाहरण देबए चाहब, हमर एक शुभेच्छु मित्र, जे जनै छैथ जे हम साए प्रतिशत नास्तिक छी, एक दिन साँझू पहर हमरासँ भिड़ि गेला आ इस्लामकेँ लऽ कऽ बहस करए लगला। मौका पाबि हम लगे-हाथ कहलयैन-

"अहाँक मुहसँ इस्लामक बात शोभा नइ दैत अछि, कियैक तँ नियमसँ अहाँ मुसलमान छीहे नहि!"

हुनकर आँखि लाल भऽ गेलैन। ओ तमसा कऽ बजला-

"ई कहबाक अहाँक हिम्मत केना भेल?"

हम कहलयैन-

"दोस (मियाँ), हमरा बजैक मौका तँ दीअ आर तावेत अपन तामसपर कंट्रोल राखू।"

हम सवालक ढेर बरसिबैत पुछलिऐ-

"अहाँ शराब पीबै छी?"

निच्चाँ नजैर केने ओ धीरेसँ बाजल-

"हँ।"

हमर दोसर सवाल छल-

"अहाँ पथिया लगबै छी। माने फुटपाथिया दोकान। भिनसर-सँ-साँझ धरि गहिंकीसँ मात्र झूठे नहि बजै छी, बल्कि सप्पत खा-खा कऽ झूठ बजै छी। मुदा जखन सौदा नइ पटैए तँ अयलाह जबानसँ ओकरा अयलाह गारि सेहो दइ छिऐ, की ई छी अहाँक इस्लाम?"

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ऐठाम ई साफ कऽ दिअ चाहै छी जे ई बात हिन्दुओ भाय लोकैनपर लागू होइतो अछि। खास कऽ ओइ हिन्दूपर जे अपने-आपकेँ धर्मक ठीकेदार मानै छैथ।

हम अपन मुस्लिम मित्रकेँ कहै छियनि जे अहाँ अपना-आपकेँ भारतक माटिमे तइ तरहेँ रचा-बसा लेने छी जे एँड़ी-सँ टिकासन तक अहाँ सुच्चा भारतीय छी, मात्र देखाबाक लेल अहाँ इस्लामी मुखौटा लगबै छी, जइसँ हिन्दु आ मुसलमानक बीच ऐ तरहेँ दूरीक जन्म होइए जइसँ रोटी-बेटीक रिश्ता-नाता तँ दूर जे एक थारीमे बैसकऽ खेना-पीनाइ तक आसान नहि, जखन कि सच्चाइ ई अछि जे भारतक तहजीबक रीत-बेवहार कोनो एहेन पहलू नइ अछि जेकरा अहाँ अपनेने नहि होइ, बल्कि कतेको मामलामे तँ अहाँकेँ महारत हाँसिल अछि।

आउ किछु बिन्दूपर खुलिकऽ चर्चा करी।

इस्लाममे जाति-पाति नहि अछि, परन्तु भारतीय मुसलमानमे तँ अछिए से अइछे नहि, बहुत बेसी धरि तक अछि। आपसमे बेटीक बियाह नइ होइए। शेख सैयद, खान-पठान ऊँच जाति, कुंजरा-जुलाहा-अंसारी नीच जाति मानल जाइ छैथ।

शादी-बियाहक रस्म-रेवाज मजहबी दूरीक बावजूद हिन्दु आ मुसलमानमे ऐ तरहेँ मिलल-जुलल अछि जे ई कहब बहुत कठिन, जे ई रेवाज केकरासँ के लेलक। कियो तँ 'वेद' आ 'कुरान-ए-पाक'मे ऐ रेवाजक केत्तौ कोनो जिकिर नहि। शेरवानी पहिरब, सेहरा लगाएब, चुहलबाजी करब, मेंहदी-उबटन लगाएब, जुआ खेलब इत्यादि-इत्यादि सभ रेवाज अहिठामक छी, कोनो सऊदी-अरब, ईरान-इराकसँ थोड़े आएल अछि।

नाच-गान, ऐक्टिंग करब, पेंटिंग करब, एतए तक कि शास्त्रीय संगीत आ भजन गायनमे मुसलमान अव्वल दर्जापर अछि। फिल्म हुअए कि नाटक आकि चित्रकला, एतए तक कि मूर्ति बनाएब ऐ सभ क्षेत्रमे मुस्लिम कलाकार आ कारीगर माहिर रहल अछि। जखन कि ऐ सभहक 'कुरान-ए-पाक'मे सख्त मनाही कएल गेल अछि। अधिकतर मुस्लिम देशमे ऐ सभपर सख्त पाबंदी अछि। उदाहरणात्मक तौरपर उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ लिअ, की बिस्मिल्लाह खाँ सऊदी अरबमे शहनाइ बजा सकै छला? फिदा हुसैन अगर मक्का मदीनामे चित्रकारी करितथि तँ हुनका ता-उम्र जेलमे बितबए पड़ितनि। मुदा ऐ कलाकार सभपर भारतकेँ आत्म-सम्मानक भान भेलै आ हुनका सभकेँ पैघ-पैघ इनामसँ नवाजल गेलैन।

भजन गायन? तौबा-तौबा। गबैबला मुसलमान, भजन लिखैबला मुसलमान, मौसीकार मुसलमान, परदापर गबैबला मुसलमान आ ऐ सभकेँ पेश करैबला प्रोड्यूसर सेहो मुसलमान। आश्चर्यो जखन ओइ भजनकेँ कियो सुनैए, तँ आस्तिक होथि वा नास्तिक भक्ति रसमे डुमि जाइए। केतेक नाओ गिनाबी कलाकार सभहक, समुच्चा पोथी लिखए पड़त। मुदा तैयो किछु कलाकारक नाओकेँ जिकिर करब जरूरी अछि जेना- 'गुलाम अली खाँ, अलाउद्दीन खाँ, उस्ताद अमीर खाँ, बेगम

अख्तर, बिस्मिल्लाह खां, उस्ताद अल्ला रक्खा, आगा हश्र कश्मीरी, नौशाद, मुहम्मद रफ़ी, साहिर लुधियानवी, मजरूह सुल्तानपुरी, सोहराब मोदी, दिलीप कुमार, सुरैया आदि।

लेखन जगतमे 'अमीर खुसरो', पहिलहिन्दीमे लेखक छला, जनिकर लिखल गीत आइयो हिन्दुक शादी-बिआहमे गाएल जाइत अछि। मलिक मुहम्मद जायसी नइ होइतैथ तँ के जानी पद्मावती होइतैथ?

रहीमक दोहा समाजसँ के परिचित नइ छैथ? श्रीक◌ृष्णपर रसखानक लिखल गीतक आइयो कियो बराबरी नहि।

कवीर रहीम गोस्वामी तुलसीदासक समकालीन छला। तुलसीदास जखन रामचरित मानस लिखि लेलैन तँ पोथीक पहिल प्रति कवि रहीमकेँ भेँट केलैन आ हुनक राय मंगलखनि। पोथी पढ़ि रहीम जे टिप्पणी केलैन, पाठककेँ जनतब हेतु ओकरा हम एतए छापि रहल छी-

"रामचरित मानस विमल
सेतन जीवन प्राण
हिन्दुआन को वेद सम
जमनहि प्रकट कुरान।"

(अब्दुर्र रहीम खानखाना)

सैयद महफूज़ हसन रिज़वी 'पुण्डरीक' हमर करीबी मीत तँ नहि मुदा मीत छला। हमर हुनकासँ मतिरता ग़ज़लकार जतिन्द्र धीरक ओतहिसँ भेल। नास्तिक होइतो रामचरित मानसपर हम अनेको प्रवचन सुनलौं। हमरा नजैरमे पुण्डरीक समाजसँ अलग रहला। रामचरित मानसपर जखन ओ बजै छला तँ लोक सभ सम्मोहित भऽ कऽ हुनक व्याख्यान सुनैत छल। लगाबे ने करै छल जे कोनो मुसलमान रामचरित मानसपर बाजि रहल छैथ। ओ निखालिस भारतीय मुसलमान छला आ भारत वर्षक तहज़ीबकेँ ओ आत्मसात कऽ लेने छला।

ई बहुत कम लोक जनै छैथ जे उर्दूमे मोहब्बत आ मुल्क परस्तीकेँ लऽ कऽ बहुत बेसी गजल-शायरी लिखल गेल, आन-आन जबानक तुलनामे।

मुस्लिम कारीगर अगर तीन मासक अवकाश लऽ लैथ तँ महल-झोपड़ी, मन्दिर-मस्जिद बनब बन्द भऽ जाएत। जेवरात बनबैसँ लऽ कऽ हीरा तराशब, जड़ी-बुटीक कारीगरी, दर्जीगिरीक क्षेत्रमे सत्तर प्रतिशतसँ बेसी कारीगर भारतीय मुसलमान छैथ और हुनकर कारीगरीक बेपार करैबला हिन्दू।

मध्यपूर्वक देशमे लाखो मुसलमान कारीगर काज करैत जाइ छैथ आओर अपन कमाएल कमाइक निवेश भारतमे करै छैथ ने कि यूरोप, अमेरिकाक बैंकमे।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

भारतीय मुसलमानक त्रासदी ई अछि जे ओ जतबे ने करै छैथ, भारतीय तहजीबमे सोलहोआना गंगल भारतीयताक स्वतंत्र देन रहल अछि ओर कौमक लोकक भारतीय तहजीबकेँ बेरन्तहा देन रहल अछि जइ दिन ओ ऐ सच्चाइसँ वावस्ता भऽ जेता आ ऐपर शुरू कराए लागत, हिन्दू मुसलमानक बीचक दूरी बहुत हद तक मेटा जाएत।

कवि निजूल इस्लामकेँ लेल जाए, ओ अपन लेख आ कविताक माध्यमसँ 'सनातन धर्म' आओर 'इस्लाम'पर हथौरीसँ चोट केलैन। ओ लिखैलन- दंगाक दौरान मन्दिर और मस्जिद तोड़ि देल जाइत अछि। मनुष्यक जान लऽ लेल जाइत अछि, ईश्वर आओर अल्लाह चुपचाप ई दृश्य देखैत रहि जाइ छैथ। मन्दिर-मस्जिद तँ फेर बनि जाएत, मुदा मनुष्यक जान आपस भऽ सकत?

मुसलमनक समाजसँ पैघ मसला ई अछि जे हुनकामे सही लीडरशिप नइ अछि। पढ़ल आ अनपढ़ल मौलवी-मुल्ला मजहबक नाओपर हुनका भड़काबै आ भटकाबै छैन। हालक किछु वर्षमे ई देखल जा रहल अछि, हिंदू लीडरशिपिक एक पैघ तबका ऐ बहुमातीक शक्तिर भऽ मुल्ला-मौलवीक रस्तापर चलि पड़ल अछि। दुनूक जुआन एक अछि, भड़काबै आओर भटकाबैक तरीका सेहो एक अछि, मुदा हुनकर बदकिस्मतीसँ हिंदूमे अप्पनो मुस्लिम कौम जकाँ कट्टरता नइ आएल अछि। 'हिंदू धर्म'केँ लऽ कऽ बहुत हद तक खुलि कऽ धर्माक गुंजाइश बँचल पड़ल अछि।

मुस्लिम कौमक तँ ई हाल अछि जे कुरान शरीफ आओर हजरत मुहम्मदकेँ लऽ कऽ, अल्लाहकेँ लऽ कऽ नुक्ताचीनी तँ दूरक बात जे कोनो सवाल तक उठबैक इजाजत नइ अछि। मुसलमानक की प्राथमिकता तालीम, सेहत, गरीबी नहि बल्कि मस्जिद अछि। कुरान शरीफकेँ कंठस्थ करैबलाकेँ हाफिज मानल जाइए आओर इज्जतक नजैरसँ देखल जाइए। मात्र कंठस्त करि कऽ 'कुरान-ए-पाक'केँ बिना समझने-बुझने! छै ने कमाल!

मुसलमानक एक त्रासदी आओर अछि जे ओ जखन नमाज पढ़ै छैथ तँ मक्का-मदीना माने सऊदी अरब दिसि मुँह घुमा कऽ, जखन कि सऊदी अरब कोनो कीमतपर हिनका अपनबै आ नागरिकता देइक लेल तैयार नहि। रहल अल्लाह केर प्रश्न, अगर ओ छैथ तँ सभ जगह छैथ।

शहर कलकत्ताक एक इलाका खिदिरपुर आओर मटियाबुर्ज अछि, जेतए अस्सी प्रतिशत आबादी मुसलमानक अछि। ओतए लगभग सातएसँ बेसी मस्जिद अछि, जइमे पचासेसँ बेसी मस्जिद पूर्णतः एयरकंडीशनसँ लैस अछि। करोड़ो रूपैआ लगा कऽ ओकर सौन्दर्यमे निखार आनल गेल मुदा समुच्चा इलाकामे एक्कोटा नीक स्कूल, एक्कोटा नीक कौलेज आकि नीक अस्पताल नहि अछि। मुसलमान सबहक पछिड़ापनक लेल केवल सरकारपर तोहमत लगाएल जाए आकि मुस्लिम कौमकेँ सेहो एकरा लेल जम्मेदार ठहराएल जाए? भारतीय मुसलमान जखन अपन भारतीय सोचक जगह 'मजहब परस्ती'केँ अन्हार-कूपमे रहब पसिन करता तँ अल्लाह सेहो हुनका ऐ सभ समस्यासँ छुटकारा नइ दिआ पौतैन।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

हिन्दू समाजक ई खासियत अछि, विशेषता अछि जे कतेको सदीसँ एक-पर-एक कतेको समाज सुधार आन्दोलन भेल, एतए तक कि स्वामी दयानन्द सरस्वती मूर्तिपूजा (बुतपरस्ती) केँ ई कहि मुखालफत केलन्हि जे ई वेदाल वैदिक युगक पश्चातिक विकृति छी। ओ अपन पोथी- 'सत्यार्थ प्रकाश'मे राम कृष्णकेँ एहेन ऐसी-कऽ-तैसी केलन्हि अछि।

राजा राममोहन राय, विद्यासागरआदि बाल-विवाहक विरोध आओर विधवा-विवाहक समर्थन केलन्हि। एतए तक कि सती-प्रथाक सेहो डटि कऽ विरोध केलन्हि। एकटा कानून 'शारदा एक्ट'क तहत बाल-विवाहपर कानूनन रोक लागि गेल। कट्टरपंथी सवर्णक विरोधक बादो ई कानून अमलमे लाओल गेल।

ऐ मुहिमकेँ आगू बढ़ौलन्हि वामपंथी आ प्रगतिशील चिंतक- विचारक। मुसलमानक तुलनामे हिन्दूमे जे बदलाव आएल, जकेँ सीमित तौरपर, मुदा ओकर असर समाजपर पड़ल आ समाजकेँ ओइसँ नोकसान नहि भेल वल्कि लाभे भेल।

मुदा विगत किछु बर्खसँ हिन्दू कौमक चक्का उल्टा घूमि रहल अछि। रूढ़िवादी पुरातनपंथी तत्त्वक सोहरामे ई घटना देखने जा रहल अछि, जेकर सभसँ बेसी लाभ ओकरा भऽ रहल अछि, जे इस्लाम आ पश्चिमसँ आबि रहल प्रगतिक नाओपर समुच्चा कौमकेँ अतीतोन्मुखी बनबैमे सफल भऽ रहल छैथ। मजगर बात तँ ई अछि जे हिन्दुत्ववादी विचार पैघ-पैघसँ तादादमे ओइ पश्चिममे जा कऽ बसि रहल छैथ, जकरा एतए रात-दिन कोसल जाइत। मुस्लिम कौमक नेता सभ जकाँ हिन्दुत्ववादी नेता सेहो 'हिन्दू धर्म खतरामे' अछि, ऐ नाओपर समुच्चा कौमकेँ गुमराह कऽ रहल छैथ आओर बहुत हद तक हुनका कामयाबी सेहो भेटलन्हि अछि। लागैए, ईश्वर-अल्लाह एते कमजोर पड़ि गेल अछि कि हुनकर शख्सियतकेँ बँचबैक कोशिशमे दुनू कौमक लोक मरि-कटि कऽ एक-दोसरक विरोधमे मोर्चा सम्हारने रहै छैथ। अफसोस ई भेल अछि जे दुनू कौमक लोक अपन बुनियादी हक- रोजी, रोटी, शिक्षा, चिकित्सा, गरीबीउन्मूलनआदिओकेँ अमानवीय वेवहारकेँ तरपर मजहबी जुनून पैदा करि कऽ घृणाक आगि सुनगा रहल छैथ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

३.पद्य

३.१.संतोष कुमार राय 'बटोही' दू- टा कविता

३.२ रामविलास साहुक हाइकू शेनर्यू

३.३.रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'- झारू

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

३.४ नन्द विलास राय- हमर [illegible]

३.५ पल्लवी मण्डल- समाज

संतोष कुमार राय 'बटोही' दू-टा कविता

१ लोकतन्त्रक प्रहरी

कुरसी सँ चिपकल लोकनि

भूलि गेलथिन्ह अपन साहिस

मुल्क र सभाक छथिए

बपौती र सभाक छथिए ।

सभ किछु पर सभहक अधिकार छन्हि

बेर-बेर ठगा रहल छथि

सत्ता मिललाक बाद

परस्य आब हटिलागानि नहि चलतन्हि ।

जाति-धरम मे बाँटि कऽ लोक कैं

संविधान सँ खेलवाड़

मंदिर-मस्जिद केर राजनीति

नहि चलतन्हि तानाशाही ।

पढ़ल-लिखल भटैक रहल अछि
नागरिक सेवा मे घुन लागलै
जनताक टाका चोरी केनिहार
शासन कैं सोना पर मूंग दरैत छथि।

घुसखोर आफिसर औदैत छथि
लूटसि भास रहल छै सरकारी खजाना
लोक सभ चिचियैत छथि जंतर-मंतर पर
अख्खवार मे लिखल गेल छै ढेर रास ।

गरीबक कियो नहि हेरैत छै
रोटी, कपड़ा,मकान,दवाई आओर शिक्षा
सभ किछु बिकाउ छै
टाका नहि अछि तँ मरि जाउ ।

सरकारी अस्पताल दम तोड़ि रहल छै
मनरेगा मे आग लागलै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑂏𑂰𑂧𑂍 𑂧𑂳𑂎𑂱𑂨𑂰 𑂄𑂋𑂩 𑂫𑂰𑂩𑂹𑂙 𑂧𑂵𑂁𑂥𑂩 𑂮𑂦 𑂐𑂳𑂮𑂎𑂷𑂩

𑂣𑂹𑂩𑂡𑂰𑂢𑂧𑂁𑂞𑂹𑂩𑂲 𑂄𑂫𑂰𑂮 𑂨𑂷𑂔𑂢𑂰 𑂧𑂵 𑂐𑂳𑂮𑂎𑂷𑂩𑂲 ।

𑂍𑂱𑂮𑂰𑂢,𑂧𑂔𑂠𑂴𑂩 𑂞𑂥𑂰𑂯 𑂦𑂵𑂪 𑂓𑂟𑂱

𑂃𑂯𑂰𑂀 𑂮𑂞𑂹𑂞𑂰 𑂧𑂪𑂠𑂰 𑂣𑂩 𑂧𑂪𑂮𑂹𑂗𑂶 𑂇𑂚𑂰𑂇

𑂮𑂁𑂫𑂶𑂡𑂰𑂢𑂱𑂍 𑂮𑂁𑂮𑂹𑂟𑂰 𑂍𑂵𑂀 𑂞𑂷𑂚-𑂤𑂷𑂚

𑂣𑂳𑂪𑂱𑂮 𑂍𑂵𑂀 𑂥𑂪 𑂣𑂩 𑂎𑂴𑂥 𑂍𑂳𑂗𑂴 ।

𑂆 𑂪𑂷𑂍𑂞𑂁𑂞𑂹𑂩 𑂓𑂱𑂨𑂶 𑂮𑂵 𑂔𑂳𑂢𑂱 𑂥𑂴𑂕𑂱𑂨𑂸

𑂔𑂢𑂞𑂰 𑂧𑂳𑂪𑂹𑂍𑂍 𑂣𑂹𑂩𑂯𑂩𑂲 𑂯𑂷𑂅𑂞 𑂓𑂶

𑂋 𑂔𑂎𑂢 𑂒𑂷𑂗 𑂍𑂩𑂞𑂰𑂯 𑂞𑂀 𑂢𑂱𑂩𑂹𑂧𑂴𑂪 𑂦𑂮 𑂔𑂰𑂨𑂥

𑂮𑂰𑂫𑂡𑂰𑂢 𑂯𑂵 𑂍𑂳𑂩𑂮𑂲 𑂥𑂰𑂥𑂴 !

𑂉 𑂥𑂯𑂱 𑂩𑂯𑂪 𑂃𑂓𑂱 𑂤𑂏𑂳𑂄𑂍 𑂥𑂨𑂰𑂩

𑂍𑂳𑂯𑂍𑂲-𑂍𑂳𑂯𑂍𑂲 𑂍𑂮 𑂯𑂱𑂨𑂰 𑂧𑂵 𑂠𑂩𑂠 𑂇𑂘𑂶𑂉

𑂐𑂩 𑂔𑂰𑂅𑂞 𑂓𑂲 𑂥𑂰𑂯𑂩 𑂃𑂥𑂶𑂞 𑂓𑂲

𑂧𑂷𑂢 𑂣𑂍𑂶𑂞 𑂓𑂟𑂱 𑂮𑂹𑂫𑂰𑂧𑂲 𑂄𑂔𑂳 𑂟𑂷𑂚

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒑𑒹 𑒧𑒰𑒃 𑒏𑒐𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒻 𑒦𑒼𑒩 ।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒙𑒲𑒏𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒯𑒢𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲

𑒥𑒢𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒲 𑒚𑒰𑒜𑓃𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒨𑒯𑒳𑒿 𑒍𑒩

𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒢𑒼𑒩।

𑒁𑒃 𑒥𑒹𑒩 𑒏𑒹 𑒤𑒑𑒳𑒂 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒼𑒩𑒲

𑒩𑓀𑒑-𑒁𑒥𑒲𑒩 𑒏𑒹 𑒅𑒛𑓃𑒾𑒞𑒯𑒱𑒢𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰

𑒏𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒁𑒃 𑒥𑒹𑒩 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒏 𑒒𑒼𑒩

𑒑𑒹 𑒧𑒰𑒃 𑒙𑒴𑒙𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒛𑒼𑒩 ।

𑒮𑒴𑒐𑒪𑒻 𑒥𑒰𑒑-𑒥𑒑𑒲𑒔𑒰

𑒯𑒩𑒱𑒞 𑒕𑒻 𑒂𑒧𑒏-𑒖𑒰𑒧𑒳𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒞

𑒣𑒱𑒨𑒰 𑒂𑒥𑒼 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒕𑒼𑒩

𑒣𑒳𑒕𑒟𑒱 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒔𑒼𑒩 ।

𑒥𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒤𑒑𑒳𑒂𑒏 𑒥𑒨𑒰𑒩

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒑𑒳𑒠𑒑𑒳𑒠𑒲 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒹

𑒙𑒳𑒙𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑒼𑒩-𑒣𑒼𑒩

𑒯𑒹 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒡𑒩𑒱 𑒩𑒐𑒥𑒻 𑒨𑒾 𑒯𑒧𑒩 𑒨𑒞𑒱-𑒨𑒼𑒩 ।

𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒨 '𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲'

𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧-𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒰

𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙-𑒑𑒼𑒢𑒾𑒪𑒲

𑒣𑓂𑒩𑒐𑓀𑒛-𑒁𑓀𑒡𑒩𑒰𑒚𑒰𑒜𑓃𑒲

𑒁𑒢𑒳𑒧𑓀𑒛𑒪-𑒗𑓀𑒗𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩

𑒖𑒱𑒪𑒰-𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲

𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩- 𑓘𑓔𑓗𑓔𑓐𑓑

𑒌 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 ggvideha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑒩𑒰𑒧𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒳𑒏 𑒙𑒢𑒏𑒰

𑒯𑒰𑒃𑒏𑒴𑒮𑒻𑒢𑓂𑒢𑓂𑒨𑒴

𑒁𑒧𑒵𑒞 𑒫𑒰𑒝𑒲
𑒕𑒰𑒢𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑒲𑒥𑒴 𑒣𑒰𑒢𑒱
𑒢𑒻 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒯𑒰𑒢𑒱

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ગરીવક છી
મરૂઆ ખાન-પાન
વઁચવે પ્રાણ

રોટી, કપડ઼ા
મકાન, શિક્ષા, સ્વાસ્થ
સબકેં ચાહી

મનક પ્ય઼ાસ
વુઝે ને મજબુરી
આદત વુરી

એક તઁ ચોરી
દોસર સીના જોરી
કી છૈ જરૂરી?

જ્ઞાનક ખાન
વ઼ેદ પુરાણ અછિ
જ્ઞાની મહાન

કર્મે ચૈન
જિંદગીક સવ઼ાડ઼ી
નૈ તઁ બખિયાડ઼ી

જીવાક ઇચ્છા
સબકેં છૈ દીર્ઘાયુ
કમ છૈ આયુ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒢𑒰𑒔𑒹 𑒥𑒰𑒢𑒩
𑒧𑒰𑒪 𑒐𑒰𑒋 𑒧𑒠𑒰𑒩𑒲
𑒏𑒲 𑒕𑒻 𑒪𑒔𑒰𑒩𑒲?

𑒞𑒳𑒪𑒮𑒲 𑒋𑒏
𑒮𑒰𑒋 𑒑𑒳𑒝 𑒦𑒩𑒪
𑒣𑒴𑒖𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒪

𑒂𑒿𑒫𑒪𑒰 𑒤𑒪
𑒁𑒧𑒵𑒞 𑒤𑒪 𑒁𑒕𑒱
𑒑𑒳𑒝 𑒦𑒩𑒪

𑒂𑒧𑒏 𑒤𑒪
𑒁𑒕𑒱 𑒤𑒪𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒰
𑒣𑓂𑒨𑒰𑒩𑒼 𑒧𑒰𑒖𑒰

𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒠𑒰𑒢𑒮𑒿
𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒻 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒰𑒢
𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒧𑒯𑒰𑒢

𑒥𑒻𑒪𑒏𑒱 𑒣𑒰𑒢𑒱
𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒲 𑒮𑓀𑒞𑒏 𑒫𑒰𑒝𑒲
𑒢𑒻 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒯𑒰𑒢𑒱

𑒧𑒹𑒒 𑒥𑒩𑒮𑒻
𑒥𑒰𑒠𑒪 𑒑𑒩𑒖𑒻𑒞

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

વેગ વળૈત

હવા વહૈત
દનિ-રાત યિલૈત
ળીવ઼ન દૈત?

રોગસઁ રોગી
તડ઼ૈપ મરૈએ તઁ
પ્રાણ કે દૈત

રામ નામકેઁ
વદનામ કરૈએ
સબ મળૈએ

સાઁઝ સમય
સુતુળ ડુમૈત-એ
દીપ ળરૈએ

શ્રન્નક સંગે
ઘુનો પસિાશ્ત-એ
તન સંગે મન

પુરાન પોથી
શ્તહિાસ, સાહતિ્ય
વઁચા કઽ રાખૂ

નશા કરૈએ
વ઼નિાશકારી કાળ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

७२९ प्रणाम

नशा सेवन
शरीर आ आत्माकेँ
हानि करैए

संग नै करुआ
ओहेन संग संगु
जे होइ पक्का

जन्म मरण
निश्चित होइत-ए
नाश्वान कहिए?

देशक लाज
प्राण मणि जुनैए
मुद्रा, आन्हर

दूतीया चान
बढ़ैत ऊपर चढ़ै
पूर्णमासँ घटै

मेघ बरसै
धनरोपनी करै
अन्न उपजै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

શુસઠ પકૈ
કટની દૌની કપૈ
કોઠી જપૈએ

શ્રન્નક દાન
સજકેँ વૅયૈ પ્નાામ
કનૂ કઠ્યાામ

સજક માન
નપ્પૈ છ૨ કસિાન
યાનસઁ માન

યાન મપ્પાન
માછક પ્પાન પાન
પાનસઁ માન

હ્વા દોમૈત
૨ળોનયિા ળપૈત
પ્પેમી તનસૈ

દુપ્પાતિ મન
શ્રન્હ્નાયિા છૈ નાતિ
દથિ યડ઼કૈ

માયા નગાની
પહુના હેનાએઠ
કેના પ્પોળવ?

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

શુભમે કેના
સમાક નાપ્પે માન
સસ્તા સમાન

નાનયિભક
શુભ વડ઼ કઠોન
વીયમે ળભ

હાટક યૌન
વાટક પાનસિઁ, નૈ
કટન દનિ

ऑંપ્યાકિ નોન
શ્રા શ્રોસ યટનેસઁ
નૈ મટિ પ્યાસ

દભિક વાન
કહૈ મૌના સૂભસઁ
પ્રેમ શ્રમન

યડ઼િ યહકૈ
એકનાક પાડ છૈ
ઉત્તમ ગુમ્ન

સંકલ્પ નેને
યીટી યઢ઼ ઉનૈ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒅𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒢

𑒢𑒹𑒞𑒰, 𑒢𑒰𑒨𑒏
𑒜𑒴𑒜𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒫𑒰𑒧𑒝𑒱
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐 𑒥𑒢𑒥𑒻

𑒥𑒰𑒅𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒱
𑒬𑒲𑒞𑒮𑒿 𑒣𑒙𑒾𑒢𑒲 𑒢𑒻
𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳
𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻
𑒞𑒻 𑒬𑓂𑒩𑒧𑒢 𑒏𑒹

𑒥𑒰𑒙 𑒞𑒰𑒏𑒻𑒞
𑒧𑒳𑒢𑒰-𑒧𑒳𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒐𑒻𑒞
𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒢𑒻 𑒏𑒼𑒃

𑒅𑒚𑒲 𑒛𑒹𑒑𑒻𑒞
𑒚𑒼𑒏𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒿𑒔𑒻𑒞
𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞

𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒢𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒻
𑒥𑒢𑒱 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑𑒲𑒏𑒹𑒿
𑒥𑒰𑒙 𑒞𑒰𑒏𑒻𑒞

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रेमक मूल्य
बोलनसँ नै मटि
आत्मा जटकै

जीवन नैया
मझधार डूबल
धर्म खेवैया

गाए-माइक
सेवासँ मिलए
उत्तम मेवा

सुखक ध्यान
कर्म अछि प्रधान
सबक मान

ज्ञानसँ करू
जगतक कल्याण
बेटा मान

ज्ञानक ध्यान
गीता, वेद, पुराण
पढ़ू मनसँ

आम उताम
सबक राखै मान

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢

𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒢𑒧𑒹
𑒠𑒴𑒡, 𑒠𑒯𑒲, 𑒒𑒲𑒌𑒮𑒿
𑒬𑒰𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒋

𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣𑒏𑒹𑒿
𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒏𑒩𑒴 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢
𑒯𑒩𑒱 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢

𑒑𑒲𑒞 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞
𑒧𑒢 𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻
𑒠𑒳𑒐 𑒯𑒩𑒰𑒋

𑒢𑒠𑒲 𑒏𑒰𑒞𑒏
𑒔𑒰𑒮-𑒥𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱
𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒂𑒮

𑒏𑒰𑒑𑒖𑒣𑒞𑓂𑒩
𑒌𑒐𑓂𑒨𑒱𑒌𑒰𑒯 𑒢𑒰𑒧 𑒞𑒿
𑒁𑒧𑒩 𑒢𑒯𑒱

𑒥𑒢 𑒣𑒩𑓂𑒥𑒞
𑒢𑒻 𑒧𑒚𑒱 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢
𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒧

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

વુઢ઼ પુનાન
શ્રનુજવ઼ી હોઇએ
કરૂ સમ્માન

મથિલામે છૈ
પાવૈન તહિાનક
વેસી યબૈન

લેખક, કવ઼િ
દુનયિઁાકૈં વનવે
ળનકૈં ળ્આની

નોટી કપડ઼ા
મકાન શકિ્ષા સ્વ઼ાસ્થ
ળરૂની શ્રછિ

દવિ઼ાલી સંગે
શ્રવૈત શ્રછિ ળાડ઼
હોલીમે ળાએ

કર્મક માન
દુનયિઁામે હોઇ છૈ
કુકર્મક નૈ

ગાછક શુલ
ખાએ ળુનાએ
ગાછ નૈ ખાએ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ળીવાક સ્ચ્છા
સભકૈં છૈ દીર્ઘાયુ
ક્નમમે પાછૂ

હિંસા નૈ કનૂ
અહિંસાસઁ કણ્યાણ
કર્મ મહાન

માન સમ્માન
સવહક કાયિૌ
સભ સીખ્યૈ

વ઼ૃક્ષા ગોપન
સત્વ઼ હિતિક કાળ
ળીવ઼ ળન્તુ ઉ

નેત્ર દાનસઁ
નૈ કોનો પૈઘ કાળ
ળગ દેખ્યૈઉ

અંગ દાનસઁ
દોસરકૈં કણ્યાણ
ઉત્તમ કાળ

રક્ત દાનસઁ
દોસરકૈં વઁચૈએ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ળનિગી પ્નામ્મ

ળ્ઞાની, સળ્ળન
સમાળક શ્રમ્ૃત
વઢ઼વે ળ્ઞાન

મીડ વ઼યન
શ્રકુન કાળ કને
નૈ કોનો હાનિ

દોસ્ત કનૈએ
દુખ્મે હતિકાળ
નૈ વદનામ

બાબ્યી મત્નિ
કુકુન સમાન-એ
હાનિ કનૈએ

તન વદૈબ
નૂપ દેખ્વૈત-એ
શ્રાત્મા એક-એ

સમાળમે નૈ
વુળુન્ગક માન છૈ
કનૂ સમ્માન

નીમક ગાછ
નોગક કટિામ્મુકૈં

मारा जिगावे

माटकि मूर्ति
सूठ सूठ ने खाए
वठि पड़ैए

अनरेवा
पित्त वायु नाशक
पैघ पायक

आँखि रहितो
जे आन्हर होइए
तँ की कहबै?

खजूरक छै
राजस्थानमे मान
शक्तिवर्द्धक अछि

ताड़ गाछसँ
ताड़ी चुववैत छै
नशा खातिर

पानसँ राखे
मेहमानक मान
मिथिला जन

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

શુભક સેળ
નીન યૈન નૈ હોઽ
મનાામાસન

કુકર્મ અછિ
નાકક સમાન
છે વદનામ

સ્નામદાનક
છૈ દુનિયાઁમે માન
હોઽ કલ્યાામ

શુભક સોભા
ગંય ઉડ઼ૈ અકાસ
સ્વ઼ર્ગાક વ઼ાસ

સ્નામકિ વભ
દેશ ભેભ મહાન
મુદ્દા ગાીવ

ખેત ઉપળૈ
છૈ અન્ન, શુભ, સાગ
સભક ભભ

હૂઽ વ઼યન
વોભિ ળઁ હતિ હુઽ
નૈ કોનો હાનિ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

શ્રુઊક નાળા
શ્રામ ળે ય્યાર્ઽ્એ સે
પહ્ઊવ઼ાન

વાસિ ોોળન
નૈ ય્યાઉ ળાનિ પ્નાામિ
હ્એ હાનિ

પાનિ ટૂય છૈ
ટુનૂ શ્રમ઼ૃ ા સન
વઁયાવે પ્નાામ

ય્યીના છી હીના
જોન ય્યાઉ નોનસઁ
નહિઁ પીડ઼ા

નાાિ ળિગૈએ
દનિ સુનૈ નાિ઼્ય઼
ક્એ વાસ

દેશ કંગાાઊ
દઊાઊ કેને શ્રછિ
માઊ હ્નૈપ

ઘાસમે ટુમિ
યનમે ગાએ શ્રછિ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

कल्याणकारी

माघक जाड़
दीनकेँ सतवैए
हिलवे हाड़

जाड़क रौद
सभकेँ मन भावे
जाड़ भगावे

मालिक चोर
मुंशी कोतवाल-ए
संत भाण्डारी

भोज भारी
दाल अछि खेसारी
खाए बैयारी

अन्हरा राजा
बहिरा अछि मंत्री
बौक छै प्रजा

रोगीकेँ भावे
से वैद्य अनमावै
जान गमवै

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ઘડ઼ી યઉ છૈ
દનિ-નાતિ સિમાન
ઊક કીએ ને?

દુખસઁ નાની
મનનોગા હોઇ છૈ
ઊઇઊાળ છૈ

ળ્ઝાનક સુખ
અસઊ સુખ અછિ
યન સુખસઁ

કન્મક શુઊ
સન નોગૈન અછિ
કન્મવીન કે?

યન ખન્યાસઁ
કન્મક ખન્યા નીક
ળેના વનખા

શુટઊ નાગ્ય઼
કન્મસઁ વનૈન-એ
ળઁ યન્મી હોઇ

ખેઊસઁ વઢ઼ૈ
યયિ઼ા-પૂનામે મેઊ

નૈ કોનો ભેદ

ભજન કરૈ
સાધુ, સંત, પુજારી
પ્યાર મહંથ

શુદ્ધ પ્યારક
સબકેં ઇચ્છા અછિ
લોપે ને ગાછ

અન્હરા નાચે
વહિરા સુનિ હિઁસે
ડીઙા સુતે

સોના ચાનીસઁ
અમીર માલોમાલ
દેશ કંગાલ

ભોજનમે છૈ
સાગ પાતક માન
કેકરા ભેલ?

ગાયક દૂધ
દહી, ઘી, ગોબર અછિ
દવાઇ સન

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ણીમક છાઉ
પત્ના, શ્ચડ઼ દવાર
નાપ્યે ણિપીગ઼

ઊાળક પ્યાણ
ઊળૈણી છૈ મહાણ
શ્નેકો કાળ

વ઼દ્વિ઼ાણક છૈ
મથિઊિમે પ્યાણ ગૈં
ળગામે ણામ

મથિઊિ ણામ
વડ઼ પૈઘ પુનાણ
છી કન્મ સ્થઉ

વ઼વિ઼કી ળ્આણી
વુયસિં કનૈ કાળ
શ્નણકા ઊઉ

ળઉ સમક
ળણિગી વઁયવૈએ
જૂમા સીય કડ

વહુ વ઼વિ઼ાહ
ગાનમેઉ ળોડ઼ી ગઁ
શ્નમાસાપ છી

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

યૌન શકિાન
દેહક વેપાન ગઁ
દેશક મુદ્દા

સ્ત્ની ઉત્પીડ઼ન
સમાળક શોષામ
અપનાધ છી

સંઘન્ષશીઉ
ગાનિશીઉ હોઇએ
ળગિની ઉઉ

સુવ઼દ્યિા અછિ
ગુામવ઼ત્તા ઘટઉ
મહ઼ગા મેઉ

સ્તાનપાનસઁ
વય્યા નગિોગ છૈ
કોનો નૈ હાનિ

યુ઼ગાક ળુઞા
કવ઼ાિભ્યક ધીયે
મનાતોદમ

પ્પેતીક કાળ
દુનયિાઁક નાપ્પૈએ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒰𑒖

𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒕𑒳𑒫𑒰𑒃
𑒠𑒴𑒡 𑒢𑒻 𑒕𑒳𑒫𑒰𑒃𑒋
𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢 𑒏𑒲 𑒕𑒲?

𑒁𑒢𑓂𑒢 𑒖𑒪𑒮𑒿
𑒣𑒼𑒮𑒰𑒃𑒞-𑒋 𑒏𑒰𑒨𑒰
𑒥𑒪𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒨𑒰

𑒏𑒳𑒏𑒩𑓂𑒧𑒰𑒯𑒰𑒏𑒹𑒿
𑒮𑒥𑒏𑒼 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒢𑒻
𑒥𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻

𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫𑒮𑒿
𑒦𑒹𑒙𑒋 𑒧𑒼𑒙𑒲 𑒧𑒼𑒙𑒲
𑒣𑒼𑒟𑒲𑒮𑒿 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢

𑒮𑒥 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒋
𑒁𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒻𑒣
𑒡𑒢𑒏𑒱 𑒫𑒢𑒲

𑒃𑒢𑓂𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒢𑒻
𑒦𑒹𑒙𑒋 𑒁𑒠𑒰𑒪𑒞𑒧𑒹
𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒥𑒱𑒏𑒻 𑒕𑒻

𑒐𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒢𑒻𑒋
𑒃𑒢𑓂𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒞

इनसान नै

रात प्यार छै
दिन ढल ह्यै छै
नेक मरै छै

मौसम जकाँ
बदैल खेल खेल
शरीर ढल

रोगी रोगसँ
पीड़ित रहैत छै
भोगीकेँ दूना

भाग्य नै बाँटै
नहि चोराबै कोइ
जाने ने कोइ?

भाग्यक खेल
चमत्कारी होइ
जाने विधाता

हनि भावना
विकासक बाधा छी
कुकर्म सन

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ળθक मान
સमासँ छै महान
वँयावे प्ाાщ

ψेθ-ψेθमे
સमासँ ન્ાψू मेθ
नै कोनो हेθ

शैताન कને
ળાનિ किઽ पનेशान
मानए ળान

माઽक ગोद
यનીक वછૌना
नै छै तुθना

દीप ળનાતિ
શ્રुतीગा ળનામિને
कोन ગθती?

वढ़ि्या यन तँ
ψन्यासँ वढ़ैत-ए
संગे कθ्याщ

ψान-पानमे
सयेत નहु ળાનિ
नै हुए हानि

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पैघ चुनौती
छल रहए कुरीति
तोड़ैत नीति

सतीत्व बल
सीता देबी परीक्षा
विनु चोखेसँ

जीव जन्तुक
जिनगी गतिशील
मरणशील

खेल कूद छै
वय्या बल जूरी
विकास बल

काम आराम
जोजन दुनू सँग
नैए समान

सुख दुख छै
सबकेँ जनमेसँ
मरने मटि

सयान बाबू
पैघ होइए चाउ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

नै ए कमाउ

कलम लखि
नजदीक खेल
खुदा हुकुमसँ

सेवा संस्थान
करैए काज
कल्याण बेल

शु◌ॉँसीक शुंदा
गान्दनमि पड़ति
देख मनैए

वाहन मान
घरमे वदनाम
करैए हानि

हितक काज
अपन हुए हानि
वढ़वे मान

प्रेमक मार्ग
स्वर्ग समान अछि
शान्तिक मार्ग

ISSN 2229-547X VIDEHA

જેહને ધ્યાએ
શ્રન્ન તેહને હોઇ
છૈ તન મન

પોથી પુરાણ
પઢ઼ે જ્ઞાની મહાન
જ્ઞાનક ધ્યાન

જ્ઞાનીક માન
મહાજ્ઞાની કરૈએ
રાજા શણામ

સૌનક રાતિ
વિજુરી ચમકૈત
મેઘ વરસૈ

જાદોમે કાદો
ચાન રોપે કિસાન
વાઢ઼સિઁ હાનિ

આસિન માસ
હથિયા હૉંટ વહૈ
ઘર ધસવૈ

કાતિક માસ
કિસાન દેખે ચાસ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒧𑒢 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮

𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒐𑒹𑒞
𑒪𑒯𑒪𑒯𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱
𑒮𑒦𑒻 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢

𑒡𑒰𑒢 𑒣𑒏𑒋
𑒏𑒙𑒢𑒲 𑒠𑒾𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒱
𑒏𑒼𑒚𑒲 𑒦𑒩𑒋

𑒁𑒑𑒯𑒢𑒧𑒹
𑒔𑒼𑒐𑒼 𑒮𑒰𑒥𑒳 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑓄
𑒁𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒧𑒙𑒹

𑒣𑒳𑒮𑒏 𑒧𑒰𑒮
𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒋
𑒍𑒮 𑒏𑒳𑒯𑒹𑒮

𑒧𑒰𑒒𑒏 𑒩𑒰𑒞𑒱
𑒏𑒢𑒏𑒢𑒲 𑒖𑒰𑒛𑓃𑒮𑒿
𑒯𑒛𑓂𑒛𑒱𑒋 𑒯𑒰𑒛𑓃

𑒤𑒰𑒑𑒳𑒢 𑒧𑒰𑒮
𑒥𑒮𑓀𑒞 𑒏𑒩𑒻 𑒩𑒰𑒖
𑒑𑒰𑒧𑒏𑒻 𑒥𑒰𑒑

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ચૈત માસમે
ચના ગહુમ પકૈ
ગાછ કટશૈ

વૈશાખ માસ
ધનતી ળચૈત-ए
નવા સમાન

ળેઠક માસ
ધનતીકેઁ વુઽવૈ
મેઘ પયિ઼ાસ

અષાઢ઼ માસ
ધાનક વીઆ ગિરા
ખેત ગળાબે

સૌનક વૂન
મોતી વનિ ગિરિए
ધના સળૈए

સોના વકૈए
નૌઠ-નૌઠ મહગા
માટિ અમુઠય઼

ક્માન ઘટિ
વેમાન નઁ વનૈए
પેટ ખાતિ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

શ્રામ ઊામ
દીનક નાપ્પે માન
વઢ઼વે શાન

યાન મપ્પાન
મથિઊિક છી શાન
પાનસઁ માન

ગુઊાવ શૂઊ
ક◌ાઁટક સંગ નહિ
મન ઉજાવે

દુપ્પ સુપ્પક
વીય ગુઊાવ નહિ
સુગંય વાઁટે

મૈથિઊિ વોઊિ
મયુન ળનજાષા
સજાક શ્રાસ

શ્રાગા પાનકિઁ
ળનવૈદ્દ, પાનાગઁ
વુહ્વે શ્રાગા

કુકુન કહી
શ્રાગા પકૈદ્દ ડગા

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒏𑒯𑒲 𑒅𑒣𑒰𑒮

𑒋𑒏 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑-𑒋
𑒮𑒳𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏
𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒯𑒱𑓀𑒮𑒰

𑒮𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒪
𑒯𑒱𑒞 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝
𑒧𑒞𑒱 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒝

𑒏𑒼𑒃𑒪𑒲 𑒏𑒴𑒏
𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒧𑒢 𑒯𑒳𑒪𑒮𑒻
𑒢𑒻𑒢 𑒥𑒢𑒮𑒻

𑒡𑒢𑒲 𑒥𑒢𑒥
𑒮𑒥𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒁𑒕𑒱
𑒠𑒲𑒢 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒹?

𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒳𑒩𑓂𑒧𑒰𑒢𑒰
𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒹 𑒢𑒹 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰
𑒢𑒯𑒱 𑒃𑓀𑒮𑒰𑒢

𑒯𑒰𑒟 𑒂𑒋𑒪
𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪
𑒕𑒑𑒳𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒦𑒹𑒪

𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒪
𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

છી ભાગ્યહીન

સંઘ્ષશીઉ
ક્મશીઉ ળનિગી
સ્નેષ્ડ હોરૂ૯

સ્ટીયનક
પહિયાન વેઢંગા
વુહૂ ઉસ્થંગા

અશ્નુ પીવ ક૬
ળેના શોકાકુઉ છી
મનઉ વુહૂ

સમસ્યા ભાની
વેમાની સ્ટૌળદાની
છી કષ્ટકાની

અનનનેવા
સ્ટઉ ગુમ્મકાની
ઔષધ ભાની

પેટક દુધ્ય
હૈ અનનનેવા
ધ્યાર્મે મેવા

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

અણનણેવા
ઉપળૈ વાડ઼ી હાડ઼ી
હને વેમાની

અણનણેવા
પેટ મનૂશ્રા શ્ઠઠ
છી હિતિકાની

સુખઠે સૌણ
કાની મેઘ નૂસઠ
ક◌ૃન્ષ મિનઠ

સુખઠ ખેત
દેખ કસિાણ કાણે
જૂખે પયિ઼ાસે

દનાન દિખ
માથા ડોકે કસિાણ
તોળએ પ્નાામ

અણ્ણ અમ્વાન
ળે ખેત ઉપળાવે
સુખ નૈ પાવે

જૂખઠે પેટ
મળદુન મનૈએ
દેખૈવઠા કે?

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

મન મોહિયા
મોહ માયામે શ્રૂઁસિ
ઊજી મરૈએ

માંગત ભીખ
કેના ળીશ્રત દીન
કી ઉચિત છૈ?

શોક સંતાપ
ગરીવકેઁ ભેટલ
વરદાનમે

ગરીવસઁ તઁ
ભગવાન વેમુખ
સુખસઁ દૂર

કેના જીવત
ગરીવક સંતાન
નૈ છી ઇંસાન

નૈ છૈ ખિલૌના
ખાઇલ નૈ છૈ ખાના
પૃથ્વી વિછૌના

દુખ ભોગૈલ
ગરીવ જનમલ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

बृषिके पीतै?

सभ इंसान
हैवान बनल-ए
सुधारत के?

मोह-मायामे
फँसल लोक सभैए
बँचाएत के?

लोभ-मोह तँ
मनुष्यक दुश्मन
तियागत के?

क्रोध आगिसँ
ज्वलनशील अछि
बँचि कऽ रहू

दुख भरल
लोकक जिनगीए
खोजैए सुख

सुख दुखक
जिनगी मधुर छै
मध्यम मार्ग

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ળે દુપ્પ સહિ
ળીવૈએ શુદ્વ સોના
સન હોઇએ

ળે નૈ સહૈએ
જૂપ્પ શ્રો કી વુહ્ન
શ્રાનક દુપ્પ

પ્પુશ્રા પ્પાએ કઽ
ળે યૈનસઁ સુનૈએ
દુપ્પ કે ઊન

શ્રુટહા પ્પાએ
દુપ્પ કાટિ ળે ળીઊે
કેકના ઊઊ

સજાક હસ્સિા
માનિ ળે પ્પેઊક
દોષી કે હેનૈ?

કહૈ ઊઊ નઁ
સજા સંતોષી શ્રછિ
શ્રયક્કી કે છી?

નોગ નદિાન
સંયમસઁ હોઇએ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

भोगी स◌ृऔए

पोड़ो, बथुआ
गरीबक साग छी
सेहत लेल

पोष्टिक साग
पोड़ो, बथुआ खाए
गरिहुआ

साग पतार
देहक रक्षा करि
रुचि बढ़ावे

सागक गुण
सब नहि बुझैए
सस्ता भेटैए

सुखक बाट
भोगी पकड़ैए नँ
दुख के लेत?

कर्महीन नै
पुरुषार्थ होइए
नर्क भोगैए

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

વ઼પિત્નિ સિહિ
ર્માન વઁયવૈએ
સ્વ઼ન્ગ પાવૈએ

વગિડ઼ઠકૈઁ
સાહિત્ય઼ સુયાગૈ છૈ
ઢોગી છોડ઼િ કિઽ

અપન હિત
દોસનકૈઁ અહિત
સ્વ઼ાન્થી કગૈએ

પ્ગેમ માન્ગસઁ
દેશ સમાળ સળિ
આગૂ વઢ઼ૈએ

પ્ગેમક વાટ
પકૈડ઼ ળે યઠૈએ
સુખ પાવૈએ

ર્ ળનિગી નૈ
નહિ ળીવૈ મગૈ છી
અયમનૂ છી

સત્ય઼ વાત આ
અમૃતવ઼ાગ્મિ વાળુ
નૈ હૈૌ હાનિ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ળીવન મ ૃત્યુ
સબક સત્ય અછિ
માયા ઘેરૈએ

દુખ સુખકેં
સમનૂપ ભોગૈત
ળીવૈત રહુ

મનક શુદ્ધિ
સાહિત્ય કરૈત-૧
સુખ દ૨૧

૧ નયનાપન અપન મંતવ્ય દિતોવાિસતાહ્ડવદિહાગાળાિયોમ **પન પઠાઉ**

નામદેવ પ્નસાદ મણ્ડલ 'હાગુદાન'

હાનૂ-
ળીયો ઓન ળીને દો મળ્તન
ળઁ ળપતૈ ૬ ળગ સંસાન॥
ળગ અમનકેં ળડ઼ ળુિએતૈ
હનિઐ માનવ અયકિાન॥
ગીત-
ળીયો ઓન ળીને દો મળ્તન
નાપૂ હનદમ યાદ યૌ-૨
કહિ કેકનોસઁ હગાડ઼ હેતૈ
હેતૈ કહિ વવિાદ યૌ-૨
કહિ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

આસમાન છી સવહક પતિ।

જૂ માથ્ટ્ઉ છી સવહક માતા।-૨

ગઁએ મૈયાની સબ જગ વાસી

મનમે કનૂ સુઆદ યૌ।-૨

કણિ।

વઢવૂ જન-જનમે સબ પ્રીત

હેૌ માનવતા કેર જીતા।-૨

એક વર્ણ જીવૈ સબ જગ વાસી

ઘર-ઘર દયિૌ સમાદ યૌ।-૨

કણિ।

દયિૌ જગ અમનપર જોર

યઉ વશ્વિ શાન્તિ કેર ઓર।-૨

કેકરો નૈ કયિૌ કરૈ ગુણામી

સબ જીવતૈ આજાદ યૌ।

કણિ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

नन्द विलासराय- हमर पापूयाम

एक दिन एला हमर दोस

जेकर नाओ छियिन हनेमान

हम आदरसँ वैसौलियिन

नेवोतला पाह पयिौलयिन

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒮𑓂𑒣𑒹𑒬𑒪 𑒣𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒂 𑒖𑒩𑓂𑒠𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑
𑒐𑒱𑒨𑒾𑒪𑒻𑒢 𑒣𑒰𑒢।
𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒼𑒮 𑒥𑒖𑒪𑒰
𑒔𑒪𑒴 𑒧𑒲𑒞 𑒯𑒧𑒩𑒼
𑒏𑒰𑒿𑒫𑒩 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒡𑒰𑒧
𑒥𑒰𑒥𑒰𑒡𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿
𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒋𑒞 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒯𑒰𑒢𑒱
𑒨𑒾 𑒦𑒼𑒪𑒰𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒕𑒻𑒟
𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒎𑒒𑒩𑒠𑒰𑒢𑒲
𑒮𑒥 𑒧𑒢𑒼𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒣𑒴𑒩 𑒏𑒩𑒞𑒰
𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒏𑒩𑒴 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮
𑒖𑒹-𑒖𑒹 𑒧𑓀𑒑𑒥𑒻 𑒮𑒥 𑒠𑒹𑒞𑒰
𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒮𑒥 𑒂𑒬।

𑒯𑒧 𑒥𑒱𑒔𑓂𑒔𑒹𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒪𑒾𑒿
𑒨𑒾 𑒠𑒼𑒮 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒋 𑒕𑒟𑒱𑒢
𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲
𑒂𑒍𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒕𑒻𑒟 𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢
𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒲
𑒏𑒟𑒲-𑒪𑒹 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒯𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒡𑒰𑒧।
𑒮𑒳𑒞𑒱 𑒅𑒚𑒱 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒱𑒨𑒻𑒢
𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧
𑒋 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒮𑒿 𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒯𑒱
𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒲 𑒯𑒧 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢
𑒖𑒰𑒫𑒹 𑒡𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒥𑒴

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

ળીવૈ છૈથ
નૈ ળાય્વ ગીન્થ સ્થાન
માધ-વાવૂ ળેગધ વસૈ છૈથ

વ઼ધ્દ છી હ્મન્ન યાનૂયામ।

ધે નયનાધન શ્રધન મંગવ્ધ્ધે દિગોનાળિસગાડડ઼વાદિહાડગામાળિયોમ **ધન ધઠાઉ।**

ધ૭૭વ઼ી મામ્૭૭, ગામ-વેનમા, ળળિ- મયુવની
સમાળ
સત્રક ઉ૭ સત્ર ગનહ્ક નયિમ વનવૈગ શ્રછિ
સમાળ ६ ળેમ્હ્ને યન ગેમ્હ્ને ત્રન પ્પસવૈગ શ્રછિ!
વેટીકેં શ્રાળ્સાકાની
સંગે સંસ્કાની વનવૈ છૈ
શ્રા વેટાકેં શક્ત્ષિગ ઑક્સિન વના
શ્રપ્પન કાળ સસાનૈ છૈ
ળૂનગ ત્રેળ ધન
એક- દોસનક સંગો પુડ઼ગિ છૈ
શ્રોગ૨ કછુિ નવ઼ કાળમે
શ્રસગાનો છોડ઼ૈ છૈ

સમાળક સાંચામે સવ ગનહેં ળૈક વનધ
કી નામ એહિ ધે સમાળે ગઁ નાવ઼્મો શ્રહેં સમાળસઁ નકિળય!
શ્રોના
સમાળક સાંચ સત્રક ઉ૭ સમાન નૈ હોયગ
નૈ ગઁ દૂઠ ત્રગવાન શ્રા સચ વદનામ હોયગ
સમાળક વીચ શ્રપ્પન નાસ્ગા વનાય્વ કઠનિ છૈ
મુદા શ્રોકન વનાર૭ નાસ્ગા ધન યાવ શ્રાસાન
મુદા ળપ્પન વહૈગ શ્રછિ પાનિ
વનુિ વનાર૭ નાસ્ગાસઁ

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

तखन सहजहि हुअ लै छै

नव बाटक संग बाटक निर्माण!

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमहि संस्कृताम्

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन

मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA